पैगंबर (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) की वसीयतें

डॉ. मुह़म्मद बक्र इस्माईल

दुसरा भाग

121-150

Rasoulallah.net

LiseOnSunnah Rasoulallah RasoulAllahnet RasusoulAllah_net

जो कोई इस बात की मन्नत मांगे कि वह अल्लाह की आज्ञा का पालन करेगा तो उसे अल्लाह की आज्ञा का पालन करना चाहिए। (यानी अपनी मन्नत पूरी करना चाहिए।)

عَنْ عَائِشَةَ - رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا - عَنِ النَّبِيِّ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: "مَنْ نَذَرَ أَنْ يُطِيعَ اللَّهَ فَلْيُطِعْهُ، وَمَنْ نَذَرَ أَنْ يَعْصِيَه فَلَا يَعْصِهِ"

तर्जुमा: हज़रत आएशा-रद़ियल्लाहु अ़न्हा- से उल्लेख है कि नबी ए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया:"जो कोई इस बात की मन्नत मांगे कि वह अल्लाह की आज्ञा का पालन करेगा तो उसे अल्लाह की आज्ञा का पालन करना चाहिए। (यानी अपनी मन्नत पूरी करना चाहिए।) और जो इस बात की मन्नत मांगे कि वह अल्लाह की नाफरमानी करेगा तो वह अल्लाह की नाफरमानी न करे। (यानी मन्नत पूरी न करे।)"

جو कोई इस बात की मन्नत मांगे कि वह अल्लाह की आज्ञा का पालन करेगा तो उसे अल्लाह की आज्ञा का पालन करना चाहिए। (यानी अपनी मन्नत पूरी करना चाहिए।)

मन्नत मांगना जायज़ कामों में से है जबकि उससे अल्लाह से नज़दीकी हासिल करना मकसूद हो।
और कभी मन्नत मुस्तहब यानी पसंदीदा होती है जबकि उससे अल्लाह की दी हुई किसी नेअ़मत पर शुक्र अदा करना मकसूद हो।

और कभी मकरूह यानी नापसंदीदा भी होती है जबकि उसके साथ किसी ऐसी चीज़ की शर्त लगा दी जाए जिसकी वह अल्लाह से ख़्वाहिश करता हो जैसे कि यूँ कहे कि अगर अल्लाह ने मुझे ठीक कर दिया तो मैं एक मेंढा या बकरी कुर्बान करूंगा या सौ रकात नमाज पढ़ूंगा या हफ्ते में दो दिन रोजे रखूंगा। क्योंकि इसमें एक तरह से अल्लाह के साथ बेअदबी है। (इसलिए कि इसमें इस इखलास नहीं है। बल्कि यह तो एक तरह का बदला है।) लिहाज़ा एक सच्चे मुसलमान को अल्लाह के लिए ऐसी मन्नत नहीं मांगना चाहिए कि जिसके बदले में वह ऐसी चीज़ के प्राप्त करने की ख़्वाहिश रखे जो उसके मुकद्दर में नहीं है या ऐसी चीज के दूर करने के ख़्वाहिश रखे जिसे अल्लाह ने उसके लिए मुकर्रर कर दिया है। लेकिन हाँ अगर किसी ने इस तरह की मन्नत मांग ली तो उसे पूरा करना जरूरी है। इसके खिलाफ अगर किसी ने गुनाह करने की मन्नत मांग ली तो उसे पूरा नहीं करना चाहिए जैसा की ह़दीस़ शरीफ में बयान हुआ।

जो कोई इस बात की मन्नत मांगे कि वह अल्लाह की आज्ञा का पालन करेगा तो उसे अल्लाह की आज्ञा का पालन करना चाहिए। (यानी अपनी मन्नत पूरी करना चाहिए।)

इस स्पष्टीकरण की रोशनी में अब हम समझ सकते हैं कि नबी ए करीम सल्लल्लाहु अलैहि विसल्लम के इस फरमाना "जो कोई इस बात की मन्नत मांगे कि वह अल्लाह की आज्ञा का पालन करेगा तो उसे अल्लाह की आज्ञा का पालन करना चाहिए।" का मतलब है कि मुस्तहब (पंसदीदा) कामों का करना या अनिवार्य (ज़रूरी) कामों को इस तरह से अदा करना जैसे कि मन्नत मांगने वाले व्यक्ति ने उन्हें अपने ऊपर ज़रूरी किया है। ताकि अल्लाह से नज़दीकी हासिल करे, नफ्स को सबक सिखाए और अपनी ख्वाहिश को लगाम कसे।

मन्नत मांगने वाले को चाहिए कि जिस चीज के करने का उसने वादा किया है यानी मन्नत मांगी है उसे पूरा करे। उसमें किसी तरह की कोताही, सुस्ती या कंजूसी न करे। क्योंकि अगर मन्नत पूरी करने करने में कोताही करता है तो वह अल्लाह के उन नेक बंदो में से नहीं होगा जिनसे अल्लाह ने अच्छा वादा किया है और जिन्हें खूब देने को कहा है।

नबी ए करीम सल्लल्लाहु अलैहि विसल्लम के फरमान: "और जो इस बात की मन्नत मांगे कि वह अल्लाह की नाफरमानी करेगा तो वह अल्लाह की नाफरमानी न करे।" में गुनाह की मन्नत पूरी करने से साफ तौर पर मनादी है।

जो कोई इस बात की मन्नत मांगे कि वह अल्लाह की आज्ञा का पालन करेगा तो उसे अल्लाह की आज्ञा का पालन करना चाहिए। (यानी अपनी मन्नत पूरी करना चाहिए।)

क्योंकि गुनाह की मन्नत पूरी करना अल्लाह के अधिकार को पूरा करने के खिलाफ है। लिहाज़ा इस तरह की मन्नत पूरी करने से हरगिज़ अल्लाह की नज़दीकी हासिल न होगी बल्कि गुनाह मिलेगा। बल्कि वास्तव में नबी ए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का यह फरमान सिरे से ही गुनाह की मन्नत मांगने की मनादी का पता देता है।

लिहाजा इंसान को कोई ऐसा काम करके अपनी जान को परेशानी में नहीं डालना चाहिए जिसके करने की उसमें ताकत न हो या जिसका करना उसे परेशानी में डाल दे और उससे उसकी रोजी-रोटी में तंगी पैदा हो या वह किसी बीमारी का कारण हो जो उससे बर्दाश्त न हो सके। क्योंकि मन्नत अल्लाह की नज़दीकी हासिल करने का एक ज़रिया है और अल्लाह की नज़दीकी न तो गुनाह से हासिल हो सकती है और न ही कोई ऐसा काम करने से जो शरिअत की रु से मुस्ताहब यानी पसंदीदा कामों के दायरे से बाहर हो। पीछे बयान की गई ह़दीस़ शरीफ से यह भी लिया जाता है कि गुनाह की मन्नत मांगना सिरे से ही जायज नहीं है और अगर किसी ने मांग भी ली तो वह होगी ही नहीं। और ना उसका पूरा करना जरूरी है। और ऐसी मन्नत मांगने वाला व्यक्ति हर हाल में गुनाहगार होगा। क्योंकि इसमें गुनाह पर जुर्अत और अल्लाह के साथ बेअदबी है। और अल्लाह बहुत ज़्यादा दयालु, निहायत रह़म करने वाला और बहुतों को माफ करने वाला है।

जो कोई इस बात की मन्नत मांगे कि वह अल्लाह की आज्ञा का पालन करेगा तो उसे अल्लाह की आज्ञा का पालन करना चाहिए। (यानी अपनी मन्नत पूरी करना चाहिए।)

इंसान अपने आप को अच्छी तरह समझता है। लिहाज़ा समझदारी इसी में है कि अपने आपको किसी ऐसी चीज का पाबंद न बनाए जिसकी वजह से वह परेशानी में पड़े। बल्कि अपने आप पर आसानी करे और जहाँ तक हो सके सही बात करे और ठीक काम करे।

छोटे छोटे गुनाहों से (भी) बचे रहो।

عَنْ سَهْل بْنِ سَعْد - رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ – أن رسول الله صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قال: "إِيَّاكُمْ وَمُحَقَّرَاتِ الذُّنُوبِ، فَإِنَّمَا مَثَلُ مُحَقَّرَاتِ الذُّنُوبِ كَمَثَلِ قَوْمٍ نَزَلُوا بَطْنَ وَادٍ فَجَاءَ ذَا بِعُودٍ وَجَاءَ ذَا بِعُودٍ حَتَّى حملوا مَا أَنْضَجُوا بِهِ خُبْزَهُمْ وَإِنَّ مُحَقَّرَاتِ الذُّنُوبِ مَتَى يُؤْخَذْ بِهَا صَاحِبُهَا تُهْلِكْهُ".

तर्जुमा: हज़रत सहल बनि सअद रदयिल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: "छोटे छोटे गुनाहों से (भी) बचे रहो।

छोटे छोटे गुनाहों से (भी) बचे रहो।

क्योंकि छोटे गुनाह उस क़ोम की तरह हैं जो किसी वादी में ठहरी, फिर उसका एक आदमी एक लकड़ी ले आया और दुसरा आदमी एक ओर लकड़ी ले आया यहाँ तक कि सभी लोग इतनी लकड़ी ले आए कि सभी ने अपनी रोटियाँ पका लीं। यकीनन जब छोटे गुनाहों की पकड़ होगी तो ये गुनाहगार को बर्बाद कर देंगे।"

सबसे खतरनाक और अज़ाब वाला गुनाह यह है कि इंसान किसी गुनाह को छोटा जानकर और आखिरत में उसके अंजाम की परवाह किए बिना उसे करता रहे। बहुत से गुनाह जिन्हें इंसान छोटा समझता है उसके बहुत से नेमतों से मेहरूमी या उसकी बर्बादी का कारण होते हैं। सहाबा ए करिम रद़यिल्लाहु अन्हुम के दिलों में अल्लाह का इतना डर था कि वे किसी गुनाह में अंतर नहीं करते थे बल्कि वह हर समय तनहाई में हो या लोगों के सामने हों हमेशा अल्लाह से डरते और किसी घड़ी उसके ज़िक्र से गाफिल नहीं होते। और अगर आराम की वजह से किसी घड़ी अल्लाह के ज़िक्र और उसकी याद गाफिल हो जाते तो उस घड़ी पर बहुत ज़्यादा अफसोस करते और अल्लाह की बारगाह में तौबा और इस्तगिफार करते।

छोटे छोटे गुनाहों से (भी) बचे रहो।

उलमा ए करिम ने गुनाहों को छोटे-बड़ों में जो बांटा है वह इसलिए ताकि उन पर एहकाम आधारित कर सकें इसलिए नहीं कि एक को हकीर और कम जानें और दूसरे को बढ़ा। एक सच्चा मुसलमान छोटे से छोटे गुनाह को भी अपने सर पर पहाड़ के बराबर समझता है जबकि गुनाहगार बड़े से बड़े गुनाह को भी एक छोटी सी मक्खी की तरह समझता है जो उसके मुंह पर बैठी और उड़ गई। हालांकि अल्लाह तआ़ला अपने बंदों के तमाम कामों को एक दफ्तर में जमा करता है। अतः कयामत के दिन जब बंदा आएगा तो उसके सामने उसके उस दफ्तर को खोला जाएगा जिसमें उसके तमाम अच्छे बुरे काम लिखे होंगे।

तो नेकियों का उसे अच्छा बदला मिलेगा और बुराइयों का बुरा। उस दिन नेक व्यक्ति कहेगा:"काश मैं कुछ और नेकियाँ कर लेता।" और गुनाहगार कहेगा: "काश मैं गुनाह न करता।" हालांकि उस समय उसका अफसोस करना उसके कुछ काम नहीं आएगा।

जो गुनाह वुज़ू और नमाज़ वगैरह से झड़ते हैं वे छोटे गुनाह है। बड़े गुनाह तो सच्ची तौबा और उन नेक काम करने से मिटते हैं जो सच्ची तौबा के सही होने का सबूत होते हैं।

छोटे छोटे गुनाहों से (भी) बचे रहो।

छोटी सी चिंगारी से ही बड़ी आग लगती है। (इसी तरह छोटे-छोटे गुनाहों से ही बड़े गुनाह बड़े गुनाह हो जाते हैं और इंसान को हलाक कर देते हैं।) क्योंकि बहुत ज़्यादा गुनाह करने से दिल की चमक खत्म हो जाती है और वह व गंदा सख्त और काला हो जाता है। लिहाजा जो व्यक्ति चाहता है कि अल्लाह उसका कि अल्लाह उसका गम दूर कर दे और उसकी परेशानी खत्म कर दे तो वह जहाँ भी हो अल्लाह से डरे और जहाँ तक हो सके गुनाहों से बचे।

नमाज़ लम्बी करो और भाषण छोटा दो।

عَن أَبِي وَائِل شَقيق ابن سلمة - قَالَ: خَطَبَنَا عَمَّارٌ فَأَوْجَزَ وَأَبْلَغَ فَلَمَّا نَزَلَ قُلْنَا: يَا أَبَا الْيَقْظَانِ لَقَدْ أَبْلَغْتَ وَأَوْجَزْتَ - فَلَوْ كُنْتَ تَنَفَّسْتَ!! فَقَالَ إِنِّي سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: "إِنَّ طُولَ صَلَاةِ الرَّجُلِ وَقِصَرَ خُطْبَتِهِ مَئِنَّةٌ مِنْ فِقْهِهِ، فَأَطِيلُوا الصَّلَاةَ وَاقْصُرُوا الْخُطْبَةَ، وَإِنَّ مِنَ الْبَيَانِ سِحْرًا".

तर्जुमा: हज़रत अबू वाईल शक़ीक़ बिन सलमा से उल्लेख है वह कहते हैं कि हज़रत अम्मार ने हमें भाषण दिया तो बहुत शानदार लेकिन थोड़ा भाषण दिया। जब वह (मिम्बर पर से नीचे) उतर कर आए तो हमने कहा:

नमाज़ लम्बी करो और भाषण छोटा दो।

:" ए अबू यक़ज़ान! आपने बहुत शानदार लेकिन थोड़ा भाषण दिया। काश आप अपना भाषण थोड़ा बड़ा कर देते!" तो उन्होंने जवाब दिया कि मैंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सुना कि आपने फरमाया: "आदमी का लम्बी नमाज़ पढ़ना और छोटा भाषण देना उसकी अक्लमंदी और समझदारी का सबूत है। इसीलिए नमाज़ लम्बी करो और भाषण छोटा दो। और कुछ बयान तो जादू होते हैं।"

यकीनन इस्लाम आसानी वाला धर्म है। न इसमें सख्ती और दुश्वरी है और न ही किसी तरह का कोई हर्ज। लिहाज़ा जो इसमें दुश्वारी पैदा करे या अपने ऊपर या लोगों पर किसी मामले में सख्ती करे तो यकीनन इस्लाम अपनी रवादारी और वसतियित (यानी संतुलन और मध्य मार्ग) द्वारा उस पर गालिब आजाएगा जिसमें न तो किसी तरह की ज़्यादती है और न कमी। क्योंकि इस्लाम खुद ही आसानी वाला धर्म है जैसा के हदीस पाक से साफतौर से सबित है। अतः वह अपनी आसानी के द्वारा हर उस व्यक्ति पर ग़ालिब आजाएगा जो उसमें ज़्यादती से काम लेगा या अपने आप या दूसरों को ऐसे कामों के करने को कहेगा जिनके करने की वे ताकत नहीं रखते हैं।

नमाज़ लम्बी करो और भाषण छोटा दो।

हमारे सामने यह एक बहुत ही महत्वपूरण वसयित है। लहिाज़ा आजकल के भाषण देने वालों को चाहएि कि इसे सामने रखें और इससे सबक हासलि करें और बेसूद लंबे लंबे भाषणों और तकरीरों से बचें और अपने आपको भी सुकून दे और दूसरों को भी चैन पहुंचाएं। क्योंकि उनके बेसूद लंबे लंबे भाषणों से बीमारों, बूढ़ों और जरूरतमंद लोगों को तकलीफ होती है और कभी-कभी तो यात्रियों की सवारी ही छूट जाती है जसिकी वजह से उन्हें सख्त परेशानियों का सामना करना पड़ता है। जुमा का खुतबा (भाषण) नमाज़ से पहले होता है।

लोग वुज़ू करके नमाज़ का इंतजार करते हैं। कुछ लोग पेट के बीमार होते हैं जसिकी वजह से बहुत देर तक इंतजार नहीं कर सकते और मस्जदि में सख्त भीड़ होती है तो न तो वे अपने वुज़ू को रोक सकते हैं और न ही दोबारा वुज़ू करने के लिए जा सकते हैं। तो ऐसी सूरत में वे अब करें भी तो क्या करें?! और भाषण देने वाला अपने भाषण में मगन रहता है। एक टॉपकि से दूसरा टॉपकि। दूसरे से तीसरा। चले ही जाता है। और उन बीमारों और धूप वगैरह में बैठे लोगों का ख्याल नहीं करता है। तो जरा अंदाजा लगाएं कि वह भाषण देने वाला इन मज़लूमों के हक में कतिना बड़ा गुनाह करता है!!

नमाज़ लम्बी करो और भाषण छोटा दो।

इस तरह के भाषण देने वाले लोगों पर ज़ुल्म व अत्याचार करते हैं। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नत का उल्लंघन करते हैं। और नमाज़ से लोगों को भगाते हैं। इसका नतीजा यह होता है कि लोग ऐसे भाषण देने वालों से नफरत करने लगते हैं।

उनकी नसीहत नसीहतें भी सुनना पसंद नहीं करते हैं यहाँ तक कि उनकी लम्बी- लम्बी तकरीरों और भाषणों की वजह से जुमा की नमाज़ भी छोड़ देते हैं। भाषण देने वाले को चाहिए कि वह इस वसियत का पालन करे और अपने भाषण के दौरान ऐसी बात करे जो लोगों के मुनासिब हो और जिस टॉपिक या मुद्दे पर बात करना चाहे उसके तत्वों को खूब अच्छी तरह से दिमाग में बिठा ले और उन्हीं के अनुसार भाषण दे। उनसे हरगिज़ न निकले ताकि लोगों का दिमाग इधर-उधर न भटके। तथा उसे चाहिए कि वह अपने भाषण में कुरान की आयतों और सहीह़ ह़दीसों का प्रयोग करे ताकि वह अपने मकसद में कामयाब हो सके।

भाषण देना या बयानबाजी एक ऐसी कला है जो भावनाओं को उभारने या पिघिलाने, लोगों की हालतों को जानकर उनका इलाज करने और ज़्यादा तवज़्जो के साथ सुनने वाला मुनासिब समय देखकर उनके मुनासिब बात करने पर आधारित है।

कोई जज (न्यायाधीश) गुस्से की स्थिति में दो लोगों के बीच फैसला न करे।

عَنْ عَبْدَ الرَّحْمَنِ بْنَ أَبِي بَكْرَةَ قَالَ: كَتَبَ أَبُو بَكْرَةَ إِلَى ابْنِهِ وكَانَ بِسِجِسْتَانَ بِأَنْ لَا تَقْضِيَ بَيْنَ اثْنَيْنِ وَأَنْتَ غَضْبَانُ؛ فَإِنِّي سَمِعْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: "لَا يَقْضِيَنَّ حَكَمٌ بَيْنَ اثْنَيْنِ وَهُوَ غَضْبَانُ"

तर्जुमा: ह़ज़रत अ़ब्दुर्रह़मान बनि अबु बकरह कहते हैं कि अबु बखरह रद़ियल्लाहु अ़न्हु ने अपने बेटे (अ़ब्दुल्लह) को पत्र लिखा और उस समय वह इस सजिस्तान थे कि गुस्से की स्थिति में कभी दो आदमियों के बीच फैसला मत करना। क्योंकि मैंने नबी ए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि विसल्लम से सुना है कि आपने इरशाद फ़रमाया: "कोई जज (न्यायाधीश) गुस्से की स्थिति में दो लोगों के बीच फैसला न करे।"

कोई जज (न्यायाधीश) गुस्से की स्थिति में दो लोगों के बीच फैसला न करे।

इसकी वजह यह है कि गुस्से की स्थिति में इंसान अपनी बुद्धि और अपने होश व हवास खो बैठता है जिसके कारण उसे नहीं पता चलता है कि वह क्या कर रहा है। इसीलिए उससे सही फैसले की उम्मीद नहीं की जा सकती। लिहाजा ऐसी स्थिति में वह जज बनने के लायक नहीं होता है। अतः उसे चाहिए कि उस समय तक कोई फैसला न ले जब तक कि पूरे तौर पर उसका गुस्सा खत्म न हो जाए और जब तक वह अपने होश व हवास में न आ जाए। इंसान का गुस्सा जब बहुत बढ़ जाता है तो वह अपनी बुद्धि खो बैठता है जिसके कारण वह पागलों जैसी बातें और काम करता है। इसीलिए ऐसी स्थिति में उसके काम और उसकी बातें उसकी तरफ नहीं की जाती हैं बल्कि उसके गुस्से की तरफ की जाती हैं।

लिहाज़ा जज जब गुस्से की हालत में फैसला करेगा तो वह सही फैसला नहीं कर पाएगा। ऐसी स्थिति में उसे चाहिए कि वह अपने फैसले में दोबारा गौर करे जबकि उसे हाकिम या बादशाह ने मुकर्रर किया हो। और अगर उसे खुद लोगों ने ही जज बनाया हो और वह गुस्से की स्थिति में फैसला कर दे तो उसे दोबारा कभी भी जज ना बनाएं। बल्कि किसी ऐसे व्यक्ति को तलाश करें जिसमें जज बनने की सारी विशेषताएं पाई जाती हों। और यही हुक्म है उसका जो भुंका-प्यासा हो, या जिसका पैशाब या पाखाना

कोई जज (न्यायाधीश) गुस्से की स्थिति में दो लोगों के बीच फैसला न करे।

और यही हुक्म है उसका जो भुंका-प्यासा हो, या जसिका पैशाब या पाखाना रुक गया हो, या हवा नकिलने से रुक गई हो, और जो बहुत गुरबत का मारा हुआ हो और पत्नी और बच्चों के खर्च से परेशान हो।

मेरे प्यारे मुसलमान भाई! बेहतर यही है कि लोगों के बीच फैसला करने के लिए जज उसी समय बना जाए जब कोई दूसरा ना हो और फैसले की सख्त जरूरत हो।

यकीनन दुनिया मीठी और हरी-भरी है।

عَنْ أَبِي سَعِيد الْخُدْرِيِّ عَنْ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: "إِنَّ الدُّنْيَا حُلْوَةٌ خَضِرَةٌ، وَإِنَّ اللَّهَ مُسْتَخْلِفُكُمْ فِيهَا، فَيَنْظُرُ كَيْفَ تَعْمَلُونَ، فَاتَّقُواالدُّنْيَا وَاتَّقُوا النِّسَاءَ، فَإِنَّ أَوَّلَ فِتْنَةِ بَنِي إِسْرَائِيلَ كَانَتْ فِي النِّسَاءِ".

तर्जुमा: हज़रत अबू सईद खुदरी रद्दियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि नबी ए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया:"यकीनन दुनिया मीठी और हरी-भरी है। और बेशक अल्लाह तुम्हें उसमें (तुमसे पहले वालों का) जानशीन (वारिस) बनाएगा। फिर देखेगा कि तुम कैसे काम करते हो।

यकीनन दुनिया मीठी और हरी-भरी है।

लिहाज़ा दुनिया (में डूब जाने) से बचे रहना। और औरतों (के फितनों में पड़ने) से दूर रहना। क्योंकि बनी इस्राइल में से सबसे पहला फितना औरतों (के मामले) में ही था।"

दुनिया की तारीफ और बुराई समय के एतबार से नहीं बल्कि लोगों के कामों के एतबार से की जाती है। क्योंकि कुछ तो केवल दुनिया ही के लिए काम करते हैं और आखिरत के लिए कुछ नहीं करते। और कुछ आखिरत के लिए करते भी हैं तो बहुत थोड़ा सा करते हैं और दुनिया ही के पाने को अपनी मंजिले मकसूद समझते हैं। जबकि कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो सिर्फ और सिर्फ आखिरत के लिए ही काम करते हैं और दुनिया की कुछ परवाह नहीं करते भले ही दुनिया उनकी मुट्ठी में आ जाए या चली जाए।

वास्तव में दुनिया की जिंदगी ऐश और आराम से भरी हुई है लेकिन यह जल्द खत्म होने वाली है जो हमेशा नहीं रहेगी। तो जो चाहे इस से अपना हिस्सा लेकर इससे फायदा उठाए और जो चाहे कोई कुबूल न होने वाली दलील की बुनियाद पर या तक़वा और परहेज़गारी का झूठा दावा करके अपने आप को इसके फायदे से महरूम रखे और उससे बिल्कुल अलग-थलग हो जाए।

यकीनन दुनिया मीठी और हरी-भरी है।

नबी ए करीम सल्लल्लाहु अलैहि विसल्लम के फरमान: "यकीनन दुनिया मीठी और हरी-भरी है।" से दो निम्नलिखित चीज़ों का पता चलता है:

पहली चीज़ तो यह दुनिया में किसी तरह किसी हद तक किसी व्यक्ति के लिए किसी समय में मिठास है। तो मोमिन को चाहिए कि जितना अल्लाह ने उसे इस दुनिया से दिया है उससे फायदा हासिल करे और आनंद ले और अपने अल्लाह का उस नेमत पर शुक्रिया अदा करे। क्योंकि शुक्र अदा करने से नेमत में ज़्यादती होती है।

दूसरी चीज़ यह के यह दुनिया जल्द ही खत्म होने वाली है। क्योंकि हरियाली जल्द ही खत्म हो जाती है। लिहाजा इंसान को चाहिए कि वह इस से अपना हिस्सा लेले और उसी पर राज़ी रहे। क्योंकि अल्लाह की तकदीर से राज़ी रहना ईमान का सबसे बड़ा दर्जा है इसके बाद कोई दर्जा नहीं। और अल्लाह के फैसले से राज़ी रहने वाले लोग ही सबसे बेहतर लोग हैं। वही हैं जिन्हें अल्लाह ने अपनी रज़ा की दौलत से नवाजा है। तो सारी बढ़ाई अल्लाह ही को है।

इस वसियत में मुखबंध और अंतभाषण दोनों हैं।

यकीनन दुनिया मीठी और हरी-भरी है।

मुख्य बंद में दुनिया की कीमत और नेक और बुरे लोगों के नजदीक उसकी हैसियत बयान की गई है। तथा उसके जल्द खत्म होने और उसमें लोगों की जिम्मेदारी की तरफ भी इशारा किया गया है।

और अंतभाषण में इस बात को बयान किया गया है कि बनी इस्राइल किस तरह औरतों के चक्कर और उनके फितनों में गिरफ्तार थे। फिर आखिर में हमें उनकी मुखालिफत करने का आदेश दिया गया है। और आदतों और मामलों में उन जैसा बनने से मना किया गया है। क्योंकि वह इस दुनिया में सबसे बुरी कौम गुजरी है उससे बुरी कोई कौम न हुई सिवाय उन लोगों के जिन्होंने उसमें से तौबा कर ली और ईमान लाकर नेक काम किए। लेकिन ऐसे बहुत कम लोग हुए।

जो मुसलमान का अधिकार है और जो उस पर अधिकार है उसमें वसियत करने का हुक्म।

عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنَ عُمَرَ - رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا - أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: "مَا حَقُّ امْرِئٍ مُسْلِمٍ لَهُ شَيْءٌ يُوصِي فِيهِ يَبِيتُ لَيْلَتَيْنِ إِلَّا وَوَصِيَّتُهُ مَكْتُوبَةٌ عِنْدَهُ".

तर्जुमा: ह़ज़रत अ़ब्दुल्लह बनि ऊ़मर रद़यिल्लाहु अ़न्हुमा बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया:"जो मुसलमान अपनी किसी चीज़ के बारे में वसयित करना चाहता है उसके लिए दो रातें भी बिना वसयित लिखे गुजारना जायज़ नहीं है। बल्कि वसयित उसके पास लिखी हुई होना चाहिए।"

जो मुसलमान का अधिकार है और जो उस पर अधिकार है उसमें वसियत करने का हुक्म।

क्योंकि जिंदिगी का कुछ पता नहीं। मौत किसी भी समय अचानक आ सकती है। लिहाज़ा अगर वह अपने माल में वसियित न करे जिससे वह अपना माल अपने वारिसों के लिए महफ़ूज़ कर सके तो वह उनके अधकिारों को बर्बाद करेगा और अपनी जिम्मेदारी में भी कोताही करने वाला शुमार किया जाएगा। और अपने सर पर इस गुनाह का वबाल उठाएगा। क्योंकि वह घर का एक जिम्मेदार व्यक्ति है और हर जिम्मेदार से उसकी जिम्मेदारी के बारे में जरूर पूछा जाएगा।

लिहाज़ा जिस माल में वह वसियित करना चाहता है अपने घरवालों को वसियित कर दे ताकि वह माल उसके लिए या उसके बच्चों और बारिसो के लिए महफूज रहे। उदाहरण के लिए वह कहे: "फुलाने फुलाने पर मेरा इतना इतना माल है। या फुलानी फुलानी जगा मेरा इतना इतना माल है। या मुझ पर फुलाने का इतना माल है।" ताकि वारिस सही से उसका तरका जमा कर लें और उसके हक में अपनी जिम्मेदारी को पूरे तौर पर अदा कर दें।

सही यही है कि जब माल ज़्यादा हो तो इस तरह की वसियित करना जरूरी है। लेकिन कुछ फुक़हा जाहिरी हदीस को देखते हुए कहते हैं कि माल कम हो या ज़्यादा यह वसियित जरूरी है।

तुम धर्म वाली (दीनदार, धार्मिक औरत) को हासिल करो।

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ - رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ - أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: "تُنْكَحُ الْمَرْأَةُ لِأَرْبَعٍ: لِمَالِهَا، وَلِحَسَبِهَا، وَلِجَمَالِهَا، وَلِدِينِهَا، فَاظْفَرْ بِذَاتِ الدِّينِ تَرِبَتْ يَدَاكَ"

तर्जुमा: हज़रत अबू हुरैरा रद़यिल्लाहु अ़न्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया:"औरत से चार कारणों की बुनियाद पर विवाह किया जाता है: धन की वजह से, वंश की बुनियाद पर, सुंदरता की काराण और धर्म की वजह से। तो तुम धर्म वाली धर्म वाली (दीनदार, धार्मिक औरत) को हासिल करो। तुम्हारे हाथ मिट्टी में मिलें।"

तुम धर्म वाली (दीनदार, धार्मिक औरत) को हासिल करो।

शादी महत्वपूर्ण मक़सदों में से एक है। क्योंकि इसी से वंश की सुरक्षा है और इसी से अल्लाह की जमीन पर उस तरह से इंसानी पैदावार होती है जैसा के इस सारी दुनिया को पैदा करने वाला अल्लाह तआ़ला अपने बंदों से चाहता है।

मर्द और औरत इस खिलाफत में दोनों एक दूसरे के शरीक हैं और अल्लाह की सीमाओं को स्थापित करने और अपनी जिम्मेदारियों को पूरा करने में एक दूसरे के मददगार हैं। इस तौर पर कि उनमें से हर एक दूसरे के लिए उसके लक्ष्य को पूरा करने का सहारा और इस रास्ते में अपनी ताकत के हिसाब से बोझ बर्दाश्त करने में दूसरे का साथी है।

माननीय और महान नसब या वंश को खास तौर पर शादी के मामले में लोगों के बीच बड़ी अहमियत हासिल है। क्योंकि यह दोनों परिवारों के दरमियान एक तराज़ू है। लिहाज़ा जरूरी है कि दोनों परिवारों में भौतिक और आध्यात्मिक रूप से बराबरी हो। ताकि किसी एक परिवार को किसी तरह का कोई नुकसान न पहुंचे।

तुम धर्म वाली (दीनदार, धार्मिक औरत) को हासिल करो।

बहुत से उलमा ए करिम के नजदीक नस्ल या वंश में बराबरी शादी के लिए शर्त है इस तौर की मर्द वंश में औरत की हैसयित का हो। क्योंकि औरत उसी से पहचानी जाती है। लिहाज़ा अगर कोई व्यक्ति किसी अच्छी नस्ल वाली औरत को चाहता हो तो यह अच्छी बात है बशर्ते कि अच्छे वंश के साथ साथ वह औरत दीनदार भी हो ताकि गलतियों में पढ़ने से महफूज रह सके।

इसी वजह से नबी ए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया:" तो तुम धर्म वाली(दीनदार, धार्मिक औरत) को हासिल करो।" यानी उसे ही अपना लक्ष्य बनाए रखें और वही असली सिद्धान्त होना चाहिए। क्योंकि दीनदार औरत से शादी करने में तुम्हारी भी मदद है और तुम्हारे दीन की भी।

क्योंकि दीनदार (धार्मिक) औरत की खूबसूरती उसके अखलाक और उसके अच्छे काम में है। क्योंकि वह ऐसे धर्म को थामे हुए है जो उसकी हफिाज़त करता है। अतः वह धर्म उसे हर एक ऐबदार चीज से महफूज रखता है और हर उस चीज से संवारता है जिससे उसकी खूबसूरती में ज़्यादती होती है। तथा उस दीनदार औरत की सारी दौलत भी उसका धर्म और दीन ही है। क्योंकि वह बरकत वाली होती है। उसकी वजह से अल्लाह कम को बहुत ज़्यादा कर देता है। क्योंकि धार्मिक औरत ज़्यादातर थोड़ी चीज पर राजी हो जाती है।

तुम धर्म वाली (दीनदार, धार्मिक औरत) को हासिल करो।

और उसके अंदर किसी तरह का लालच नहीं होता कि जिसकी वजह से वह पति से ऐसी चीज मांगे जो वह लाकर नहीं दे सकता। अतः वह खर्च के मामले में संतुलन से काम लेती है। क्योंकि उसके धर्म ने उसे यही सिखाया होता है। लिहाज़ा दीनदार औरत के काम में, उसकी बात में और हालत में बाहरी खूबसूरती भी नजर आती है और अंदरूनी भी।

अत: उसकी बात में सच उसका ज़ेवर होता है। उसके काम में ईमान उसका सिंगार होता है। और उसकी हालत में संतुलन उसकी विशेषता होता है। लिहाज़ा अगर कभी गुस्सा भी करती है तो आपे से बाहर नहीं होती है और न ही उसकी वजह से होश व हवास खोती है।

ज़्यादा प्यार करने वाली और ज़्यादा बच्चे पैदा करने वाली औरतों से शादी करो।

عَنْ مَعْقِل بْن يَسَار- رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ - قَالَ: جَاءَ رَجُلٌ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ إِنِّي أَحببتُ امْرَأَةً ذَاتَ حَسَبٍ وَجَمَالٍ وَإِنَّهَا لَا تَلِدُ أَفَأَتزوَّجُهَا؟ قَالَ: "لَا" ثُمَّ أَتَاهُ الثَّانِيَةَ، فنَهَاهُ، ثُمَّ أَتَاهُ الثَّالِثَةَ، فَقَالَ: "تَزَوَّجُوا الْوَدُودَ الْوَلُودَ فَإِنِّي مُكَاثِرٌ بِكُمْ الْأُمَمَ"".

तर्जुमा: हज़रत मअ़क़िल बिन यसार रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि एक व्यक्ति नबी ए करीम सल्लल्लाहु अलैहि विसल्लम के पास आया और बोला: "मुझे एक औरत का रिश्ता मिल रहा है जो अच्छे नसब (वंश) वाली और सुंदर है। लेकिन बच्चे पैदा करने के लायक नहीं है।

ज़्यादा प्यार करने वाली और ज़्यादा बच्चे पैदा करने वाली औरतों से शादी

तो क्या मैं उससे शादी कर लूँ? नबी ए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया:"नहीं।"वह व्यक्ति दोबारा आया (और यही पूछा।) तो नबी ए करीम सल्लल्लाहु अलैहि विसल्लम ने उससे मना कर दिया। वह तीसरी बार फिर से आए तो नबी ए करीम सल्लल्लाहु अलैहि विसल्लम ने इरशाद फ़रमाया:" ज़्यादा प्यार करने वाली और ज़्यादा बच्चे पैदा करने वाली औरतों से शादी करो। क्योंकि मैं (क़यामत के दिन) तुम्हारे ज़्यादा होने की वजह से दुसरी उम्मतों पर गर्व करूंगा।"

बच्चे पैदा करना शादी का सबसे बड़ा फायदा और सबसे महत्वपूर्ण मकसद है। बल्कि वही असल मकसद है। बाकी दुसरी चीजें तो उसके साथ शामिल हैं। बच्चों की ख्वाहिश व इच्छा करना वाजिब किफ़ाया है यानी अगर सभी लोग बच्चों की इच्छा छोड़ दें और बच्चे पैदा करना न चाहें तो सभी गुनाहगार होंगे। इसका कारण यह है कि बच्चों के जन्म पर ही कयामत तक मानव जाति की सुरक्षा और इंसानियत का वजूद (अस्तित्व) निर्भर है।

ज़्यादा प्यार करने वाली और ज़्यादा बच्चे पैदा करने वाली औरतों से शादी

इसी वजह से तो अल्लाह ने शादी को जायज़ किया और उसके लिए ऐसा बारीक और मजबूत तथा बेहतर सिस्टम बनाया जो प्यार और मोहब्बत और दया की छाया में पति-पत्नी में हर एक के अधिकार का पूरा ख्याल रखता है। और उन्हें ऐसे अंदाज में बच्चे पैदा करने पर उभरता है जिससे उन्हें बच्चों की जरूरत और उनकी इच्छा महसूस हो। और वह इस नेमत पर अपने अल्लाह का शुक्रिया अदा करें।

इसीलिए नबी ए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया: "ज़्यादा प्यार करने वाली और ज़्यादा बच्चे पैदा करने वाली औरतों से शादी करो। क्योंकि मैं (क़यामत के दिन) तुम्हारे ज़्यादा होने की वजह से दुसरी उम्मतों पर गर्व करूंगा।" लिहाजा बांझ और बच्चे पैदा ना करने वाली औरत से शादी की मनादी के बारे में नबी ए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की यह साफ वसियत है।

ह़दीस़ शरीफ में "अल वदूद" शब्द आया है जिसका मतलब है जो अपने पति, पड़ोसियों, उसके रिश्तेदारों और अपने रिश्तेदारों से ज़्यादा मोहब्बत करती हो। जिसकी फितरत में मोहब्बत हो।

ज़्यादा प्यार करने वाली और ज़्यादा बच्चे पैदा करने वाली औरतों से शादी

बनावटी मोहब्बत न हो। क्योंकि बनावटी मोहब्बत का जल्द ही भांडा फूट जाता है जिसके कारण फिर उसे पति और उसके घर वालों के सामने बेइज़्ज़ती का सामना करना पड़ता है। और फिर नतीजा यह होता है कि हालात बिगड़ जाते हैं और बुरी स्थिति हो जाती है। क्योंकि तबीयत और फितरत बनावटी आदत पर हमेशा गालिब आ जाती है।

तथा हदीस पाक में "अल वलूद" का शब्द आया है। इसका मतलब है वह औरत जो ज़्यादा बच्चे पैदा करती हो यानी एक साल में एक बार जानती हो जिसकी वजह से उसका पति उससे खुश हो जाता है खासतौर पर जब कि वह बच्चा लड़का हो। क्योंकि अरब के लोग पहले भी लड़कियों से ज़्यादा लड़कों को पसंद करते थे और अभी भी। हालांकि लड़कियाँ माता-पिता के लिए दुनिया में भी भलाई हैं और आखिरत में भी। काश इस तरह के लोग यह जान पाते।

नबी ए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम वाले ने ज़्यादा बच्चे पैदा करने वाली औरतों से शादी करने पर उभारा है ताकि नेक नस्ल (वंश) ज़्यादा हो और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कयामत के दिन अपनी उम्मत के ज़्यादा होने की वजह से दूसरी उम्मतों पर गर्व करें।

ज़्यादा प्यार करने वाली और ज़्यादा बच्चे पैदा करने वाली औरतों से शादी

और हाँ जहाँ तक बुरी नस्ल का सवाल है तो नबी ए करीम सल्लल्लाहू का उससे कोई नाता नहीं है। न ही वह आपको जानती है और न ही आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम। लिहाज़ा वह ऐसे ही है जैसे कि बाढ़ का कूड़ा-कचरा जिसमें राई के दाने बराबर भी इस्लाम नहीं है।

इस निकाह (विवाह) का ऐलान करो।

عَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ – رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا – أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ
قال: "أَعْلِنُوا هَذَا النِّكَاحَ وَاجْعَلُوهُ فِي الْمَسَاجِدِ وَاضْرِبُوا عَلَيْهِ بِالدُّفُوفِ

तर्जुमा: ह़ज़रत आएशा रद़यिल्लाहु अन्हा कहती हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: "इस निकाह (विवाह) का ऐलान करो। इसे मस्जिदों में करो। और इसमें दफ़ें बजाओ।"

इस निकाह (विवाह) का ऐलान करो।

निकाह एक पाक बंधन और मजबूत वचन है जो पति-पत्नी में से हर एक दूसरे की खातिर लेता है और जिसके नतीजे में अल्लाह की रखी हुई सीमाओं के अंदर एक दूसरे से आनंद लेना जायज हो जाता है।

तथा यह एक फितरती सुन्नत और जीवन की सख्त जरूरतों में से एक ज़रूरत भी है। इसी से परिवारों और समाजों में बंधन मजबूत होते हैं। इसी से नस्ल की सुरक्षा होती है और धरती आबाद होती है।

इस बंधन की शान यह है कि घर वालों, पड़ोसियों और पति-पत्नी के सारे जानने वालों के दरमियान इस की शोहरत होना चाहिए ताकि पति-पत्नी लोगों की बातों से सुरक्षित रहें और उनकी इज़्जत पर कोई धब्बा न आए। इसी वजह से नबी ए करीम सल्लल्लाहु अलैहिस्सिलाम वसल्लम ने पति-पत्नी के घरवालों को यह वसियत की कि वे अपने समय में चलने वाले मशहूर तरीकों से रोज़ाना आने जाने की जगह यानी मस्जिदों में उनके निकाह का ऐलान करें। इस हदीस़ शरीफ में तीन वसियतें हैं:

पहली वसियत: यह है कि जायज़ तरीकों से निकाह का ऐलान किया जाए। और ऐसे बहुत से तरीके हैं। निकाह को मशहूर करने के लिए लोगों में बहुत सी रस्में होती हैं। तो जो उनमें अच्छी हो इस्लाम ने उसे जायज़ कहा है। और जो बुरी है उससे मना किया है।

इस निकाह (विवाह) का ऐलान करो।

दूसरी वसयित: उस जगह को बताना है जहाँ नकिाह का ऐलान कयिा जाए और वह जगह मस्जदिें हैं जनिमें हर नमाज में अल्लाह के नेक बंदे जमा होते हैं। लहिाजा यह जमीन के ऊपर सबसे अच्छी सबसे पवति्र जगह है। जैसा क िनकिाह सबसे पवति्र बंधन और अक़द है। लहिाज़ा उसमें कोई ताज्जुब की बात नहीं क िनबी ए करीम सल्लल्लाहु अ़लैह िवसल्लम ने मस्जदि में इसके ऐलान करने का आदेश दयिा है। तथा इसमें बहुत से फायदे भी हैं जनिमें से कुछ नम्निलखिति हैं:

एक यह के अल्लाह इस बंधन में बरकत फरमाता है। पत-िपत्नी पर अपनी दया और कृपा की बारशिें करता है। और उनमें प्यार और मोहब्बत बढ़ाता है।

और एक फायदा यह है क िअल्लाह के पवति्र घर में अल्लाह को हाजरि जानकर जमीन के ऊपर सबसे बेहतरीन जगह में सच, खुलूस और अच्छे व्यवहार का पत-िपत्नी एक दूसरे से वादा करते हैं।

इस निकाह (विवाह) का ऐलान करो।

लिहाज़ा सुकून और वकार से भरपूर रहकर मस्जिद से बाहर निकलते हैं। और अपने अंदर ऐसा इत्मीनान और सुकून महसूस करते हैं कि अगर मस्जिद के अलावा किसी और जगह मैं यह निकाह होता तो ऐसा कभी महसूस न करते। और जब जब वे उस जगह को देखते हैं तो उनकी याद ताजा हो जाती है और उन्हें उनका वचन याद आ जाता है जिसकी वजह से उनमें प्यार और मोहब्बत बढ़ जाता है। तथा जो भी निकाह अल्लाह की आज्ञा का पालन करने और अल्लाह की नजदीकी से शुरू होता है तो वह ऐसा बंधन है कि इंशाअ अल्लाह कभी नहीं टूटेगा। लिहाज़ा पति-पत्नी में से हर एक को खुश होना चाहिए। और हाँ याद रहे कि सारी खुशी अल्लाह ही की आज्ञा का पालन करने और उसी की तरफ लो लगाने में हैं।

तीसरी वसियत: यह है कि नबी ए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने निकाह में दफ़ बजाने का आदेश दिया। और हाँ याद रहे कि यह दफ़ मस्जिदों के अलावा जगहों में बजाई जाए।

क्या तुम्हारे साथ लहव (दफ़ बजाने वाला) न था?

عَـنْ عَائِشَـةَ - رَضِيَ اللَّـهُ عَنْهَـا - أَنَّهَـا زَفَّـتْ امْـرَأَةً إِلَى رَجُـلٍ مِـنْ الْأَنْصَـارِ فَقَـالَ نَبِـيُّ اللَّـهِ صَـلَّى اللَّـهُ عَلَيْـهِ وَسَـلَّمَ: "يَـا عَائِشَـةُ، مَـا كَانَ مَعَكُـمْ لَهْـوٌ؟ فَـإِنَّ الْأَنْصَارَ يُعْجِبُهُمْ اللَّهْوُ".

तर्जुमा: ह़ज़रत आ़एशा रद़ियल्लाहु अ़न्हा कहती हैं कि वह एक दुल्हन को (विदा करने) उनके पत एक अंसारी मर्द के पास लेकर गाईं। तो नबी ए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि विसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: "ए आ़एशा! क्या तुम्हारे साथ लहव (दफ़ बजाने वाला) न था? क्योंकि अंसारी को दफ़ पंसद है।"

क्या तुम्हारे साथ लह्व (दफ़ बजाने वाला) न था?

खुशी का इजहार करने के लिए लोगों के अपने अपने विभिन्नि प्रकार के तरीके और आदतें हैं। कुछ तो इस्लाम ने जायज़ करार दिए हैं। और कुछ को नजायज़ कहा है। जबकि उनमें कुछ ऐसे भी हैं जिनिमें से अखलाक़ी या सामाजि बुराइयों को दूर करने के बाद उन्हें जायज़ करार दिया है।

इस्लाम जैसा कि हमें मालूम है फितिरत का धर्म है। तो जो फितिरत के मुताबकि चीजें होती हैं उनसे इस्लाम मना नहीं करता है बल्कि उन्हें संवार कर जायज़ रखता है। और जो चीज़े फितिरत या उसकी जरूरतों के खलिाफ होती हैं या उस पर बुरा असर डालती हैं उन्हें दूर कर देता है। लिहाज़ा जब तक लोग अल्लाह की बनाई हुई अपनी फितिरत पर रहेंगे हैं ठीक रहेगें। इसी कारण इस धर्म को फितिरत का धर्म कहा जाता है।

नबी ए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि विसल्लम का फरमान :" क्या तुम्हारे साथ लह्व (दफ़ बजाने वाला) न था?" ज़ाहरि में तो सवाल है। लेकनि इससे दफ़ बजाने पर उभारना मकसूद है।
ह़दीस़ पाक में "लह्व" शब्द आया है। इसका मतलब है दफ़ बजाना या कुछ गाना। इसे "लह्व" इसलिए कहा गया है कि लोग इसके द्वारा अपनी खुशी का इजहार करते हैं और आने वाली भलाई की एक दूसरे को खुशखबरी देते हैं।

क्या तुम्हारे साथ लहव (दफ़ बजाने वाला) न था?

गुजरी हुई चीजों के अलावा इस ह़दीस़ पाक से यह भी लिया जाता है कि शादी अल्लाह की एक बहुत बड़ी नेमत है। और यह की जायज़ तरीके से इसका इजहार करना इस नेमत पर अल्लाह का शुक्र अदा करना है। लिहाज़ा हर मुसलमान को चाहिए कि वह यही नियत करे ताकि वह इस खुशी के इजहार करने के लिए जो भी कुछ करे उस पर उसे सवाब (पुण्य) मिले। क्योंकि मोमिन अगर अपनी सांसो को भी अल्लाह के रास्ते में खर्च करे तो अल्लाह उन्हें शुमार करता है और उन पर उसे सवाब देता है।

इस ह़दीस़ पाक से यह भी लिया जाता है कि इस तरह के मौकों पर जायज़ खेलकूद मुस्तह़ब (पसंदीदा) है। तो जो उसे नहीं करता वह अपने आप को भी उस जायज़ खेलकूद से आनंद लेने से महरूम रखता है और पति-पत्नी को भी। अतः जीवन में अगर इस तरह की के खुशी के मौके और लम्हे न हों कि जिनमें इंसान कुछ आनंद ले सके तो उसका मानसिक और दिमागी संतुलन ही बिगड़ जाएगा और उसका जीवन तंग होकर रह जाएगा।

लिहाज़ा हम में से हर एक को सख्ती, ज़्यादती और बिना जाने हुए किसी भी चीज़ को जायज़ या नाजायज़ कहने से डरते रहना चाहिए। क्योंकि यह अल्लाह पर झूठ बांधना है जिससे हर एक को बचना चाहिए और तौबा करनी चाहिए।

क्या तुम्हारे साथ लहव (दफ़ बजाने वाला) न था?

दफ़ बजा कर और जायज़ चीज़े गाकर शादी की खुशी का इजहार करने से पति-पत्नी और उनके परविार वालों के दरमयिान मोहब्बत पैदा होती है।और एक लंबे समय तक उनके और खासकर पति-पत्नी के दमिाग में ये यादगार लम्हे रहते हैं।

तथा यह चीज बहुत सी बमिारयिों के इलाज का कारण है जो शायद इसी से दूर होती हैं। जैसे कि मानसकि दबाव (repression), अंतर्मुखता (introversion) और आत्म- संदेह (self-doubt) आदि मानसकि बीमारयिाँ जनिका इलाज कभी कभी डाक्टर भी नहीं कर पाते हैं।

ऐ अल्लाह! मैं तुझसे इसकी भलाई और वह भलाई मांगता हूँ जिस पर तू ने इसे पैदा किया है।

عَنْ عَمْرِو بْنِ شُعَيْبٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ جَدِّهِ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: "إِذَا تَزَوَّجَ أَحَدُكُمْ امْرَأَةً، أَوْ اشْتَرَى خَادِمًا، فَلْيَقُلْ: اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ خَيْرَهَا وَخَيْرَ مَا جَبَلْتَهَا عَلَيْهِ، وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّهَا وَشَرِّ مَا جَبَلْتَهَا عَلَيْهِ.
وَإِنِ اشْتَرَى بَعِيرًا، فَلْيَأْخُذْ بِذِرْوَةِ سَنَامِهِ، وَلْيَقُلْ مِثْلَ ذَلِكَ".

तर्जुमा: हज़रत अम्र बनि शुऐब अपने पिता से और उनके पिता उनके दादा से उल्लेख करते हैं कि नबी ए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया:"जब तुम में से कोई व्यक्ति शादी करे या कोई गुलाम खरीदे तो यह दुआ पढ़े:

ऐ अल्लाह! मैं तुझसे इसकी भलाई और वह भलाई मांगता हूँ जिस पर तू ने इसे पैदा किया है।

"اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ خَيْرَهَا وَخَيْرَ مَا جَبَلْتَهَا عَلَيْهِ وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّهَا وَمِنْ شَرِّ مَا جَبَلْتَهَا عَلَيْهِ"

उच्चारण: अल्लाहुम्मा इन्नी अस्अलुका खैरहा व खैरा मा जबल्तहा अलैहि व अऊज़ो बिक मिन शर्रिहा व मिन शर्रे मा जबल्तहा अलैहि।

अर्थ : "ऐ अल्लाह! मैं तुझसे इसकी भलाई और वह भलाई मांगता हूँ जिस पर तू ने इसे पैदा किया है। तथा मैं इसकी बुराई और उस बुराई से तेरे शरण में आता हूँ जिस पर तू ने इसे पैदा किया है।" और अगर ऊंट खरीदे तो उसके कोहान को पकड़ कर यह दुआ पढ़े।"

और एक दुसरी रिवायत में है: "फिर और पत्नी और गुलाम के सामने के भाग (पेशानी) को पकड़ कर बरकत की दुआ करे।"

नेक पत्नी दुनिया की भालाईयों में से एक बड़ी भलाई और मर्द पर अल्लाह की नेमतों में से एक महान नेमत है। क्योंकि वह इसके साथ मानसिक और शारीरिक सुकून और इत्मीनान महसूस करता है जिसमें अपनी जान और तसल्ली पाता है। अपने बच्चों की परवरिश, अपने घर की सुरक्षा और अपने मामलों में उस पर भरोसा करता है। उससे उसे हर वह चीज मिलती है जिसकी हर मर्द अपनी उस पत्नी से इच्छा रखता है जिसे हासिल करने में वह अपनी सारी कोशिश है लगा देता है। लिहाज़ा नेक महिला नेकी व परहेज़गारी के बाद एक मर्द को नसीब होने वाली सबसे बड़ी दौलत है।

ऐ अल्लाह! मैं तुझसे इसकी भलाई और वह भलाई मांगता हूँ जिस पर तू ने इसे पैदा किया है।

नबी ए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि विसल्लम के फ़रमाने "तुम में से कोई व्यक्ति जब किसी औरत से शादी करे।" का मतलब है कि जब वह औरत उसके पास आए और अपने आप को उसे सौप दे तो वह अल्लाह की दिल और ज़ुबान से तारीफ बयान करे। और नबी ए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि विसल्लम पर दुरूद भेजने के बाद उसके माथ पर हाथ रख कर ह़दीस़ शरीफ में आई हुई दुआ पढ़े।

नबी ए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि विसल्लम के फ़रमान: "ऐ अल्लाह! मैं तुझसे इसकी भलाई और वह भलाई मांगता हूँ जिस पर तू ने इसे पैदा किया है।" का मतलब है कि मैं तुझ से यह दुआ करता हूँ कि जो भलाई इसके अंदर है उससे मुझे फायदा पहुंचा। इसके जरिए तू मुझे हराम व नाजायज काम से बचा। हराम चीजों को देखने से मुझे दूर रख। इसके धन और सुंदरता से -जब के धन और सुंदरता वाली- हो मुझे फायदा पहुंचा। इसके द्वारा मेरी तन्हाई में सुकून पैदा फरमा। मेरे गम को दूर कर। इसे पहले अपनी आज्ञा का पालन करने की और बाद में मेरी आज्ञा का पालन करने की क्षमता अता फरमा। इसके द्वारा मुझे बेटियाँ और बेटे दे। और इन जैसी दुसरी नेक दुआएं जो भी दुआ करने वाले पति के दिमाग में आएं। क्योंकि शब्द "भलाई" पिछली तमाम चीजों को शामिल है और इनके अलावा को भी।

ऐ अल्लाह! मैं तुझसे इसकी भलाई और वह भलाई मांगता हूँ जिस पर तू ने इसे पैदा किया है।

तो जब-जब दुआ करने वाला इस दुआ़ को करेगा चाहे इन शब्दों के साथ करे या इनके मानों के साथ तो यह अल्लाह के यहाँ पसंदीदा होगा। और इस दुआ को दोहराना इंशाअ अल्लाह उसके स्वीकार होने का कारण होगा। और ताकि पति की यह दुआ़ कुबूल हो तो उसके लिए यह भी जरूरी है कि वह अपनी पत्नी के लिए भी यह दुआ करे कि अल्लाह उसे उसकी भलाई दे और उसकी बुराई से उसे सुरक्षित रखे। और औरत के लिए भी यह मुस्तहब (पसंदीदा) है कि वह भी अपने लिए ऐसी ही दुआ करे जैसे कि उसका पति अपने लिए कर रहा है।

ऐसी स्थिति में दुआ़ करने से पति-पत्नी को इत्मीनान और सुकून हासिल होगा और उनके दरमियान मोहब्बत बढ़ेगी। क्योंकि उनमें से हर एक को दूसरे से हमेशा भलाई ही मिलने का एहसास होगा।

यह दुआ सिर्फ पहली मुलाकात ही तक सीमित नहीं है बल्कि पति-पत्नी में से जब भी किसी को दूसरे की तरफ से किसी तरह की बुराई महसूस हो या बुराई आने का खतरा हो तो वह यह दुआ करें। हाँ अलबत्ता पहली मुलाकात में यह दुआ जरूर करें।

औरतों में जाने से बचो।

عَـنْ عُقْبَـةَ بْـنِ عَامِـرٍ- رَضِيَ اللَّـهُ عَنْـهُ - أَنَّ رَسُـولَ اللَّـهِ صَـلَّى اللَّهُ عَلَيْـهِ وَسَـلَّمَ قَـالَ: "إِيَّاكُـمْ وَالدُّخُـولَ عَـلَى النِّسَـاءِ" فَقَـالَ رَجُـلٌ مِـنْ الْأَنْصَـارِ: يَـا رَسُـولَ اللَّـهِ! "أَفَرَأَيْتَ الْحَمْوَ قَالَ الْحَمْوُ الْمَوْتُ".

तर्जुमा: हज़रत उक़बा बनि आमरि रद़यिल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: "औरतों में जाने से बचो।" तो एक अंसारी सहाबी ने पुछा: "ए अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु! देवर (या जेठ) के बारे में आप क्या कहते हैं? (वह अपने भाभी के पास जा सकता है या नहीं?)" तो नबी ए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "देवर (या जेठ) तो मौत (तबाही) है।"

औरतों में जाने से बचो।

इस्लाम हमेशा इज्जत और आबरू की हिफाजत करता है और हमेशा बुराई, छेड़छाड़ और उसे हर तरह की अफवाह से बचाने की कोशिश में रहता है।

एक सच्चे मोमिन के लिए उसके धर्म और उसकी इज़्जत से बढ़कर कोई चीज नहीं है। उसका धर्म ही उसके मामले की सुरक्षा और उसकी बुद्धि और सोच का बादशाह है। उसके आदेशों का पालन करने में कभी कोताही नहीं करता है। न ही अपने अल्लाह के अधिकार में कमी करता है और न ही अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की सुन्नतों में लापरवाही बरतता है। धर्म और इज़्जत आबरू की हिफाज़त ही के मकसद से नबी ए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने शक में पढ़ने से चेतावनी दी। क्योंकि शक ज़्यादातर हराम काम करने या अफवाह फैलाने का कारण होता है। और इसी कारण से नबी करीम ए सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने अजनबी औरतों के पास जाने से मना किया। क्योंकि सिर्फ उनके पास जाना ही संदेह या शक का कारण है। और हो सकता है कि वह फितने में पड़ जाए खासकर जब आना जाना इतना ज़्यादा हो जाए कि विशिष समाज में भी उसको बुरा न समझा जाए हालांकि ऐसे गलत समाज का कोई ऐतबार नहीं न तो धार्मिक किसी मामले में और न ही दुनियावी किसी मामले में।

औरतों में जाने से बचो।

और जो ऊपर बयान की हुई ह़दीस़ शरीफ में सोच विचार करे तो उसे अच्छी तरह यह पता चल जाएगा कि किब औरतों के पास जाना चाहिए और कब नहीं। किनि औरतों के पास जाना जायज है और किनि के नहीं। और शादी के लिए किनि शर्तों का पाया जाना जरूरी है। तथा यह भी जान लेगा कि इस और इस जैसी दुसरी वसियितों की आज्ञा का पालन करने में लापरवाही बरतने से आने वाले और जिसके पास आ रहा है उसके लिए कितिना बड़ा खतरा है।

अगर कोई व्यक्ति अपने लिए मौत का खौफ खाता है तो उसे अपने आप पर, अपनी पत्नी और अपनी इज्जत और आबरू पर उस करीबी व्यक्ति से खौफ खाना चाहिए कि जो इजाजत या बिना इजाजत के जब चाहे घर में घुसा चला आता है कि जिसे समाज में बुरा नहीं समझा जाता। और जब उससे इस बारे में पूछा जाए या मना किया जाए या शर्म दिलाई जाए तो कहता है: "तुम्हें क्या? यह तो मेरे भाई का घर है। इसमें तो मेरी भाभी रहती हैं। कोई अंजान औरत थोड़ी है।" आदि आदि उल्टे सीधे जवाब देता है।

मेरे प्यारे भाई याद रखो कि हक और सही बात इसके ज़्यादा लायक है कि उसे अपनाया जाए। और हक बात यही है कि बिना इजाजत आने वाले व्यक्ति से अपने घर को बचाओ खासकर अपने और अपनी पत्नी के रिश्तेदारों या मिलने जुलने वालों से।

कोई भी व्यक्ति किसी भी अजनबी औरत के साथ उसके महरम (वह करीबी व्यक्ति जिससे उसका विवाह जायज़ न हो।) के बगैर हरगिज तन्हाई इख़्तियार न करे।

عَـنْ ابْـنَ عَبَّـاس - رَضِيَ اللَّـهُ عَنْـهُ - عَـنْ النَّبِـيِّ صَلَّى اللَّـهُ عَلَيْـه وَسَـلَّمَ قَـالَ "لَا يَخْلُـوَنَّ رَجُـلٌ بِامْـرَأَةٍ إِلَّا وَمَعَهَـا ذُو مَحْـرَمٍ، وَلَا تُسَـافِرْ الْمَـرْأَةُ إِلَّا مَـعَ ذِي مَحْـرَمٍ، فَقَـامَ رَجُـلٌ فَقَـالَ يَـا رَسُـولَ اللَّـهِ! إِنَّ امْـرَأَتِي خَرَجَـتْ حَاجَّـةً وَإِنِّي اكْتُتِبْتُ فِي غَزْوَةِ كَذَا وكَذَا. قَالَ:"انْطَلِقْ فَحُجَّ مَعَ امْرَأَتِكَ".

तर्जुमा: हज़रत इब्ने अब्बास रदयिल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि नबी ए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया:"कोई भी व्यक्ति किसी भी अजनबी औरत के साथ उसके महरम (वह करीबी व्यक्ति जिससे उसका विवाह जायज़ न हो।)

कोई भी व्यक्ति किसी भी अजनबी औरत के साथ उसके महरम (वह करीबी व्यक्ति जिससे उसका विवाह जायज़ न हो।) के बगैर हरगिज तन्हाई इख्तियार न करे।

के बगैर हरगिज तन्हाई इख़्तियार न करे। और न ही कोई औरत अपने महरम के बगैर यात्रा करे।" इसी दौरान एक व्यक्ति खड़ा हुआ और बोला:" ए अल्लाह के रसूल! मेरी पत्नी ह़ज के लिए रवाना हो चुकी है जबकि मेरा फुलाने फुलाने युद्ध में नाम लिखा जा चुका है।" तो नबी ए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: "जाओ और अपनी पत्नी के साथ जाकर ह़ज करो।"

अजनबी या अनजान महिला के साथ तन्हाई इख़्तियार करना शक, बुराई, विश्वासघात और फितने का कारण है। और यह उन लोगों के लिए बहुत बड़ा गुनाह है जो इसके आदी हो चुके हैं या इसमें लापरवाही बरतते हैं या इस मामले या इसके परिणाम को हल्का समझते हैं।

महरम व्यक्ति के बगैर महिला का इतनी दूर यात्रा करना कि जिसमें उसे नुकसान पहुंचने का खतरा हो जान को जोखिम में डालना है। तथा बिना महरम के बिना यात्रा करना मर्यादा, अदब और रीति-रिवाज के भी खिलाफ है जिसका ख़्याल रखना ज़रूरी है।
एक बुद्धिमान और गैरतमंद व्यक्ति कभी भी अपनी पत्नी को अकेले यात्रा नहीं करने देता है भले ही वह यात्रा नेकी के लिए क्यों ना हो। बल्कि या तो वह खुद उसके साथ जाता है या फिर उसके किसी महरम व्यक्ति को उसके साथ भेजता है।

कोई भी व्यक्ति किसी भी अजनबी औरत के साथ उसके महरम (वह करीबी व्यक्ति जिससे उसका विवाह जायज़ न हो।) के बगैर हरगिज तन्हाई इख्तियार न करे।

इस वसियत के अंदर महिला से अकेले यात्रा करने से या किसी अजनबी या अनजान के साथ तनहाई इख्तियार करने से महिला को भी और बहेसियत उसके जिम्मेदार और उसके हाकिम या शासक होने के मर्द को भी सख्त चेतावनी दी गई है। मतलब यह है कि केवल महरम की मौजूदगी में ही अजनबी व्यक्ति को किसी महिला से मिलना चाहिए। ऐसे ही महिला को भी उसके महरम की मौजूदगी ही में इसकी इजाजत दी जाए। यह सिर्फ इसलिए नहीं ताकि उस अजनबी के हमला करने की सूरत में वह महरम व्यक्ति अपनी करीबी महिला का बचाव कर सके। बल्कि इसलिए भी है ताकि वह महिला शकों व संदेहों और नादानों की अफवाहों से सुरक्षित रह सके। क्योंकि इज्जत और आबरू शुद्ध दूध की तरह है कि जिसे थोड़ी सी चीज भी गंदा कर देती है और फिर वह दोबारा कभी ऐसा नहीं हो सकता जैसे के पहले था।

जिस यात्रा में महिलाओं के साथ महरम का होना जरूरी है दूरी और दिन और रात से निर्धारित नहीं किया जाएगा। बल्कि वह उस दूरी या अवधि से निर्धारित होगा जिसमें अगर उसका कोई महरम उसके साथ न हो तो उसे नुकसान पहुंच सकता है।

कोई भी व्यक्ति किसी भी अजनबी औरत के साथ उसके महरम (वह करीबी व्यक्ति जिससे उसका विवाह जायज़ न हो।) के बगैर हरगिज तन्हाई इख्तियार न करे।

अगर औरत कहीं यात्रा करना चाहे भले ही दूर ही सही और रास्ता सुरक्षित और शांतपूर्ण हो और उसके साथ शांतपूर्ण साहचर्य (संगठन या संगत) हो तो इस संगत से महरम की भरपाई हो जाएगी। ईमाम मालिक (उन पर अल्लाह की कृपा हो।) के नजदीक शांतपूर्ण संगत की तादाद दौ पुरुष और तीन महिलाएं और ईमाम शाफ़ई के यहाँ चार महिलाएं हैं।

इस मामले में हमें ज़्यादा सख़्ती नहीं बरतनी चाहिए। बल्कि जिरूरी है कि हम उन स्थितियों को देखें जिनमें महिला यात्रा करना चाहती है। महिला की ताकत और क्षमता को भी देखना चाहिए कि वह अपना बचाव कर सकती है या नहीं, या अपने आप को महफ़ूज़ रख सकती है या नहीं, उसे रास्ते और सभ्यता (संस्कृति) का अनुभव है या नहीं। तथा उस आबादी को भी देखना चाहिए जहाँ वह महिला यात्रा करके जा रही है कि वह कितनी और कैसी है। क्योंकि इन सब चीज़ों को देखते हुए हम इस्लाम की रवादारी और आसानी का ख़्याल करते हुए आसानी के साथ सही हुक्म लगा सकते हैं।

ए महिलाओं के समूह! सदक़ा (दान) दो भले ही अपने गहनों में से दो।

عَنْ زَيْنَبَ امْرَأَةِ عَبْدِ اللَّه – رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا- قَالَتْ: قَالَ رَسُولُ اللَّه صَلَّى اللَّهُ عَلَيْه وَسَلَّمَ "تَصَدَّقْنَ يَا مَعْشَرَ النِّسَاءِ وَلَوْ مِنْ حُلِيِّكُنَّ" قَالَتْ: فَرَجَعْتُ إِلَى عَبْدِ اللَّه فَقُلْتُ: إِنَّكَ رَجُلٌ خَفِيفُ ذَاتِ الْيَدِ، وَإِنَّ رَسُولَ اللَّه صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَدْ أَمَرَنَا بِالصَّدَقَةِ. فَأْتِهِ فَاسْأَلْهُ. فَإِنْ كَانَ ذَلِكَ يَجْزِي عَنِّي وَإِلَّا صَرَفْتُهَا إِلَى غَيْرِكُمْ. قَالَتْ: فَقَالَ لِي عَبْدُ اللَّهِ بَلْ ائْتِيهِ أَنْتقَالَتْ: فَانْطَلَقْتُ. فَإِذَا امْرَأَةٌ مِنْ الْأَنْصَارِ بِبَابِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَاجَتِي حَاجَتُهَا. قَالَتْ: وَكَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَدْ أُلْقِيَتْ عَلَيْهِ الْمَهَابَةُ

ए महिलाओं के समूह! सदक़ा (दान) दो भले ही अपने गहनों में से दो।

قَالَتْ: فَخَرَجَ عَلَيْنَا بِلَالٌ فَقُلْنَا لَهُ ائْتِ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَخْبِرْهُ أَنَّ امْرَأَتَيْنِ بِالْبَابِ تَسْأَلَانِكَ: أَتُجْزِئُ الصَّدَقَةُ عَنْهُمَا عَلَى أَزْوَاجِهِمَا وَعَلَى أَيْتَامٍ فِي حُجُورِهِمَا؟ وَلَا تُخْبِرْهُ مَنْ نَحْنُ. قَالَتْ: فَدَخَلَ بِلَالٌ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَسَأَلَهُ. فَقَالَ لَهُ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ "مَنْ هُمَا؟" فَقَالَ: امْرَأَةٌ مِنْ الْأَنْصَارِ وَزَيْنَبُ، فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ "أَيُّ الزَّيَانِبِ؟" قَالَ: امْرَأَةُ عَبْدِ اللَّهِ فَقَالَ لَهُ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ "لَهُمَا أَجْرَانِ: أَجْرُ الْقَرَابَةِ وَأَجْرُ الصَّدَقَةِ".

तर्जुमा: ह़ज़रत अ़ब्दुल्लह रद़यिल्लाहु अ़न्हु की पत्नी ह़ज़रत ज़ैनब रद़यिल्लाहु अ़न्हा कहती हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया:"ए महिलाओं के समूह! सदक़ा (दान) दो भले ही अपने गहनों में से दो।" वह कहती हैं कि मैं (अपने पति) अ़ब्दुल्लह के पास आई और उनसे कहा:" तुम खाली हाथ हो और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने हमें सदक़ा देने का आदेश दिया है। तो तुम जाकर नबी ए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से पूछो कि अगर मैं तुम्हें दे दूँ तो सदका अदा हो जाएगा तो तो ठीक है वरना तुम्हारे अलावा किसी और को दे दूँ। वह कहती हैं: तो अ़ब्दुल्लह रद़यिल्लाहु अ़न्हु ने मुझसे कहा तुम खुद ही जाकर नबी ए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से पूछ लो।

ए महिलाओं के समूह! सदक़ा (दान) दो भले ही अपने गहनों में से दो।

वह कहती हैं फिर मैं आई तो देखती हूँ कि अंसार की औरत नबी ए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के दरवाजे पर खड़ी थी और उसका भी वही काम था जो मेरा था। कहती हैं और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का बड़ा डर था। वह कहती हैं तो ह़ज़रत बिलाल रद़ियल्लाहु अ़न्हु निकले तो हमने उनसे कहा कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास जाओ और बताओ कि दो महिलाएं दरवाजे पर हैं और वह यह पूछ रही हैं कि अगर वे अपने पतियों और अपनी गोद में पलने वाले यतीम बच्चों को सदका दे दें तो क्या उनका सदक़ा अदा हो जाएगा या नहीं? और नबी ए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को यह न बताना कि हम कौन हैं। ह़ज़रत ज़ैनब रद़ियल्लाहु अ़न्हा कहती हैं फिर सैयदना ह़ज़रत बिलाल रद़ियल्लाहु अ़न्हु ने अल्लाह के रसूल से पूछा तो आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फरमाया वे कौन है? तो ह़ज़रत बिलाल रद़ियल्लाहु अ़न्हु ने बताया कि एक अंसारी महिला हैं और दूसरी ज़ैनब हैं। तो आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फरमाया कि कोन सी ज़ैनब? तो ह़ज़रत बिलाल ने बताया कि अ़ब्दुल्लाह की पत्नी। तो आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने ह़ज़रत बिलाल रद़ियल्लाहु अ़न्हु से फरमाया:"उनको उसमें दोहरा सवाब है। एक तो रिश्तेदारी का और दूसरा सदक़े का।"

ए महिलाओं के समूह! सदक़ा (दान) दो भले ही अपने गहनों में से दो।

नबी ए करीम सल्लल्लाहु अलैहि विसल्लम मर्दों को नसीहत करने के बाद खासतौर से औरतों के लिए समय निकालते और उन्हें भी मर्दों जैसी नसीहत करते। नेक काम करने और उन पर सवाब पाने में महिलाएँ पुरुषों ही की तरह है लेकिन इसके बावजूद भी आप सल्लल्लाहु अलैहि विसल्लम औरतों को खासतौर पर नसीहत करते ताकि ज़्यादा नेक काम करने और मर्दों की तरह उन्हें भी गरीबों और मिसकीनों को खाना खिलाने पर उभारें।

महिलाओं को इस विशेष रूप से नसीहत सुनने में इतनी मिठास मिलती कि कभी-कभी वह मर्दों से ज़्यादा आप सल्लल्लाहु अलैहि विसल्लम की आज्ञा का पालन करतीं। लिहाज़ा नेक कामों में जल्दी करतीं और नमाज़, रोज़े, ज़कात और दूसरी इबादतों और नेक कामों में मर्दों से मुकाबला करतीं।

महिलाएँ रिश्तेदारों, गरीबों और मिसकीनों के मामलों में मर्दों से ज़्यादा दयालु और रहम दिल होती हैं। तथा ज़्यादा गुनाहों की वजह से उन्हें मर्दों से अधिक सदक़े और खैरात करने की जरूरत होती है। क्योंकि वह बहुत ज़्यादा गालीगलौज करती हैं। अपने पतियों की बहुत ज़्यादा नाफरमानी करती हैं। और ऐसे काम करती हैं जिनके कारण उन्हें नरक जाना ज़रूरी हो जाता है।

ए महिलाओं के समूह! सदक़ा (दान) दो भले ही अपने गहनों में से दो।

तो नबी ए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के फरमान:"ए महिलाओं के समूह! सदक़ा दो भले ही अपने गहनों में से दो।" से मकसूद महिलाओं को इस बात पर उभारना है कि वे अल्लाह की प्रसन्नता और उसकी खुशी के लिए अपने धन में से कुछ फकीरों, यतीमो और मसिकीनों के ऊपर खर्च करें भले ही गहनों में से क्यों न करें। गहने औरतों के लिए सबसे कीमती चीज होती है। इसीलिए बनाओ-सिंगार और दिखावे की चाहत की वजह ज़्यादातर अपने गहनों में से कुछ खर्च नहीं करना चाहती हैं। तो गोया कि नबी ए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम उनसे कह रहे हैं कि अपने धन में कंजूसी न करो भले ही वह तुम्हें कितने ही प्यारा क्यों न हो। क्योंकि आखिरत उससे बेहतर है और हमेशा रहने वाली है। और बंदे को अच्छा सवाब उसी समय मिलेगा जबकि वह अपनी पसंदीदा चीज खर्च करे। और संभव है कि नबी ए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का फरमान "भले ही अपने गहनों में से।" उनके पास मौजूद धन या फिर ऐसी कीमती चीजों में कंजूसी करने के बहाने को खत्म करने के लिए हो जिनकी वजह से वे सदक़ा नहीं कर सकती हों।

याद रखें कि सदक़ा का सवाब अच्छी नियत और देने वाले की स्थिति के हिसाब से मिलता है।

बुरे गुमान (या बुरी सोच व शक) से बचो।

عَـنْ أَبِي هُرَيْـرَةَ - رَضِيَ اللَّـهُ عَنْـهُ - أَنَّ رَسُـولُ اللَّـهِ صَـلَّى اللَّـهُ عَلَيْـهِ وَسَـلَّمَ قَـالَ: "إِيَّاكُـمْ وَالظَّـنَّ؛ فَإِنَّ الظَّـنَّ أَكْـذَبُ الْحَديـث، وَلَا تَحَسَّـسُوا، وَلَا تَجَسَّـسُـوا، وَلَا تَبَاغَضُوا، وَلَا تَدَابَرُوا، وَكُونُوا عِبَادَ اللَّهِ إِخْوَانًا

तर्जुमा: ह़ज़रत अबू हुरैरा रद़यिल्लाहु अ़न्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया:"बुरे गुमान (या बुरी सोच व शक) से बचो। क्योंकि बुरा गुमान सबसे बड़ा झूठ है। आपस में एक दूसरे की बुराई न ढूंढो। न एक दूसरे की जासूसी करो। न एक दूसरे से नफरत करो। और न ही पीठ पीछे किसी की बुराई करो। (या न एक दूसरे से पीठ फेरो।) बल्कि अल्लाह के बंदे भाई भाई हो जाओ।"

बुरे गुमान (या बुरी सोच व शक) से बचो।

इस्लामी शरीयत के आदेश और नियम सच और यकीन पर आधारित हैं न कि गुमान और अंदाजे पर। इसीलिए इस्लाम के अक़ीदे और शरियत के नियम निश्चित और यकीनी हैं। न इसमें कोई शक है और न किसी तरह का कोई विरोधाभास (इख़्तिलाफ)।

इस्लाम मुसलमान को शक और उसकी तबाह कारियों, नफ्स के खतरों और शैतान की चालों और उसके वसवसों से महफूज रखता है। इंसान अपने दिल का कैदी होता है। अगर दिल सही है तो इंसान भी सही है और अगर दिल खराब है तो इंसान भी खराब है। और दिल उसी समय सही हो सकता है जबकि वह बिना वजह के इधर-उधर से आने वाले शकों और संदेहों को छोड़ दे।

क्योंकि इस तरह के शक और संदेह दिल गंदा कर देते हैं और उसकी चमक-दमक और इत्मीनान व सुकून को खत्म कर देते हैं। इसीलिए नबी ए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इस वसियत के अंदर बुरी सोच या बुरा गुमान करने से सख्त तौर पर मना फ़रमाया। अतः आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फरमाया: "बुरे गुमान से बचे रहो। क्योंकि बुरा गुमान सबसे बड़ा झूठ है।"

बुरे गुमान (या बुरी सोच व शक) से बचो।

बुरा गुमान अल्लाह के यहाँ भी सबसे बड़ा झूठ है और लोगों के यहाँ भी।

याद रहे कि गुमान दो तरह का होता है एक तो अच्छा गुमान जो भलाई का कारण होता है और बुरी आस्था तक पहुंचाने वाले शक को दूर रखता है।

और दूसरा बुरा गुमान जो इज़्जत व आबरू से खिलवाड़, मासूमों के साथ धोखाधड़ी और लोगों के दरमियान फितने व फसाद का कारण होता है।

हमें मालूम है कि दिल की सच्चाई ही द्वारा आखिरत में बंदे को अल्लाह के आजाब से छुटकारा मिलेगा। लिहाज़ा हर मुसलमान को चाहिए कि जहाँ तक हो सके वह अपने मुसलमान भाई के बारे में अच्छा सोचे।

अगर आपके दिल में कोई बुरा गुमान या बुरी सोच बैठ जाए तो जासूसी और कमियाँ तलाश करके उसकी तहकीक करने की कोशिश न करें। और अगर आपको किसी चीज से अपशगुनी महसूस हो तो आप उसे शुभ में बदल दें और अल्लाह पर भरोसा रखते हुए गुज़र जाएं।

नर्मी (कोमलता) से काम लो।

عَنْ شُرَيْحِ بْنِ هَانِئٍ – رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا – قَالَ: رَكِبَتْ عَائِشَةُ زَوْجُ النَّبِيِّ
صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بَعِيرًا فَكَانَتْ فِيهِ صُعُوبَةٌ فَجَعَلَتْ تُرَدِّدُهُ فَقَالَ لَهَا
رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : "عَلَيْكِ بِالرِّفْقِ فَإِنَّ الرِّفْقَ لَا يَكُونُ فِي
شَيْءٍ إِلَّا زَانَهُ، وَلَا يُنْزَعُ مِنْ شَيْءٍ إِلَّا شَانَهُ".

तर्जुमा: ह़ज़रत शुरैह़ बनि हानी रद़यिल्लाहु अ़न्हुमा बयान करते हैं कि नबी ए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की प्यारी पत्नी ह़ज़रत आ़एशा रद़यिल्लाहु अ़न्हा एक ऊंट पर चढ़ीं। उसमें कुछ सख़्ती थी। तो ह़ज़रत आ़एशा उसे फेराने लगीं।

नर्मी (कोमलता) से काम लो।

तो नबी ए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनसे फरमाया:"नर्मी (कोमलता) से काम लो। क्योंकि नर्मी जिस चीज में भी होती है उसकी शान बढ़ा देती है। और जिस से नर्मी खत्म हो जाती है वह ऐबदार हो जाती है। (या उसकी शान घट जाती है।)"

नबी ए करीम सल्लल्लाहू अलेही वसल्लम जिस तरह इंसानों के साथ दयालु और रहम दिल थे इसी तरह जानवरों के साथ भी दयालु और रहम दिल थे। हर चीज के लिए आप प्यार व मोहब्बत और दया का केन्द्र थे।

इस्लाम एक ऐसा धर्म है जिसने अपनी शिक्षाओं के अंदर हिकमत या समझदारी के ऐसे नियम व सिद्धांत रखे हैं जिनके कारण लोग आपस में भी एक दूसरे पर दया करते हैं और अपने मातहत जानवरों के साथ भी दया और रहम दिली से पेश आते हैं। क्योंकि जानवरों को इंसानों पर दया और इनाम के लिए पैदा किया गया है। लिहाज़ा उनके साथ नरमी बरतना, अच्छा व्यवहार करना और जहाँ तक हो सके उन्हें तकलीफ न देना यह एक तरह का उन जानवरों का शुक्रिया अदा करना है।

नर्मी (कोमलता) से काम लो।

नरमी एक अच्छी और महान आदत और हमेशा रहने वाला सम्मान और ऐसा बेहतर व्यवहार है कि जिसमें यह भी यह होता है उस पर हर जगह और हर जमाने में गर्व किया जाता है।

अल्लाह ने हर चीज पर दया करना अनिवार्य किया है। और एक सच्चा मोमिन अपने आप पर, अपने भाइयों पर और अपने जानवरों पर दयालु और रहम दिल होता है। तथा वह हर नजर आने वाले जानवर के साथ दयालु होता है। अगर वह प्यासा होता है तो उसे पानी पिलाता है। अगर भूखा हो तो खाना खिलाता है। अगर बिना वजह कैद या फंसा हुआ हो तो उसे आजाद कर देता है। और अगर उसे रखना चाहे या खाने के लिए काटना चाहे तो उसके साथ नरमी से पेश आता है और अच्छा व्यवहार करता है।

सोदा बेचते समय ज़्यादा कसमें न खाया करो।

عَـنْ أَبِي قَتَـادَةَ الْأَنْصَـارِيِّ، أَنَّـهُ سَـمِعَ رَسُـولَ اللَّـهِ صَـلَّى اللَّـهُ عَلَيْـهِ وَسَـلَّمَ يَقُولُ: "إِيَّاكُمْ وكَثْرَةَ الْحَلِفِ فِي الْبَيْعِ، فَإِنَّهُ يُنَفِّقُ ثُمَّ يَمْحَقُ

तर्जुमा: ह़ज़रत अबू क़तादह अंसारी बयान करते हैं कि उन्होंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को सुना कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: "सोदा बेचते समय ज़्यादा कसमें न खाया करो। क्योंकि (झूठी) कसम से सामान तो बिक जाता है लेकिन बरकत खत्म हो जाती है।"

सोदा बेचते समय ज़्यादा कसमें न खाया करो।

बाजारों वगैरह में व्यापारियों की आदत होती है कि वे अपने सामानों और सौदों को बढ़ावा देने के लिए और लालच और हड़प की वजह से अपनी तरफ से बढ़ाई हुई कई गुना ज़्यादा कीमतों में ही लोगों को अपना सामान खरीदने पर तैयार करने के लिए तरह-तरह की बड़ी-बड़ी कसमें खाते और हर तरह की चालें चलते हैं। और इसकी कुछ परवाह नहीं करते कि वह कितने कितने बड़े गुनाह कर रहे हैं जो कि दुनिया और आखिरत दोनों में उनके नुकसान का कारण हैं।

उन्हीं बड़े गुनाहों में से एक यह भी है कि वह अल्लाह की बहुत ज़्यादा कसमें खाते हैं हालांकि अल्लाह की कसम खाने से मना किया गया है सिवाय जरूरत के समय के जैसे कि किसी पर उसके धर्म या उसकी इज़्जत के मामले में तोहमत लगाई जाए या उस पर चोरी चोरी का आरोप लगाया जाए तो ऐसी सूरत में बादशाह या जज उसे कसम खाने का हुक्म देगा या फिर दावा करने वाले से कसम खाने को कहेगा जबकि उसे लगता हो कि कसम खाने से वह बरी हो जाएगा।

सोदा बेचते समय ज़्यादा कसमें न खाया करो।

और चूंकि व्यापार में जानबूझकर या बिना जानबूझे बेचने और खरीदने वाले दोनों बहुत ज़्यादा कसमें खाते हैं। इसीलिए नबी ए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इससे सख्त तरह से मना फ़रमाया और इसके अंजाम से डराया। और बयान किया कि इससे बरकत और उसके आसार खत्म हो जाते हैं। लिहाज़ा न तो फायदा जायज होता है और ना लाभदायक। बल्कि नुकसान कसम खाने वाले जूते के तसमे (फीते) से भी ज़्यादा करीब रहता है। और उसे उस समय मायूसी का सामना करना पड़ता है जबकि उसे गुमान भी नहीं होता।

लिहाज़ा व्यापार के नियमों में से यह भी है कि अल्लाह के साथ और लोगों के साथ हमेशा सच्चाई और ईमानदारी से काम लिया जाए इस तरह की धोखाधड़ी और विश्वासघात न किया जाए और न ही सोदे को बढ़ावा देने के लिए गलत तरीकों का इस्तेमाल किया जाए।

याद रखें कि सच्चाई के लिए ईमानदारी ऐसे ही है जैसे कि बदन के लिए आत्मा। लिहाज़ा न तो सच्चाई के बगैर ईमानदारी पाई जा सकती है और न ही ईमानदारी के बिना सच्चाई पाई जा सकती है।

सोदा बेचते समय ज़्यादा कसमें न खाया करो।

और व्यापार जैसा कि हमें मालूम है दो धारी तलवार है। या तो व्यापारी बेचते और खरीदते समय सच बोले, जहाँ तक हो सके न्याय से काम ले और हर सूरत में ईमानदारी का ख्याल रखे। और इस तरह से दुनिया और आखिरत दोनों में महान कामयाबी हासिल करे। या फिर धोखाधड़ी और विश्वासघात करे और छोटी-बड़ी चीज पर बहुत ज़्यादा कसमें खाए और दुनिया और आखिरत दोनों में बड़ा नुकसान उठाए।

ए मेरे प्यारे भाई! याद रखो कि व्यापार दो तरह का है: एक अल्लाह के साथ और दूसरा लोगों के साथ। लिहाज़ा दूसरे के चक्कर में पढ़कर पहले को भूल मत जाना। बल्कि उन लोगों में से हो जाओ जो जिन्हें दुनिया का व्यापार और उसका धन आखिरत के व्यापार और उसके धन से अंजान नहीं करता है।

उसे शहद पिलाओ।

عَنْ أَبِي سَعِيد - رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ - أَنَّ رَجُلًا أَتَى النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: أَخِي يَشْتَكِي بَطْنَهُ، فَقَالَ: "اسْقِه عَسَلًا"، ثُمَّ أَتَى الثَّانِيَةَ فَقَالَ: "اسْقِه عَسَلًا" ثُمَّ أَتَاهُ الثَّالِثَةَ فَقَالَ: "اسْقِه عَسَلًا"، ثُمَّ أَتَاهُ فَقَالَ: قَدْ فَعَلْتُ، فَقَالَ: "صَدَقَ اللَّهُ وَكَذَبَ بَطْنُ أَخِيكَ، اسْقِهِ عَسَلًا، فَسَقَاهُ فَبَرَأَ"

तर्जुमा: हज़रत अबू सईद खुदरी रद़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि एक व्यक्ति नबी ए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आया और कहा कि मेरे भाई का पेट खराब हो गया है।

उसे शहद पिलाओ।

तो नबी ए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उससे फरमाया कि उन्हें शहद पिलाओ। फिर वही व्यक्ति दूसरी बार आया। नबी ए करीम सल्लल्लाहु वसल्लम ने उससे इस बार भी शहद पिलाने के लिए कहा। वह फिर तीसरी बार आए और बोले कि आपके आदेश के मुताबिक मैंने काम किया। (लेकिन मेरा भाई ठीक नहीं हुआ।) तो नबी ए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फरमाया कि अल्लाह सच्चा है (कि शहद में इलाज है) और तुम्हारे भाई का पेट झूठा है। उन्हें फिर शहद पिलाओ। तथा उन्होंने अपने भाई को फिर शहद पिलाया तो वह उससे ठीक हो गए।

नबी ए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम अपने सहा़बा ए करिाम रद़ियल्लाहु अ़न्हुम इकराम के बीच आयुर्विज्ञान (डाक्टरी या बीमारी के इलाज का ज्ञान) और हकिमत से मशहूर थे। आप रोग को पहचान लेते और उसकी सही दवा बताते। यह आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की एक बसीरत (अन्तर्दृष्टि, परख) थी जो अल्लाह ने खासतौर पर आपको दी थी।

उसे शहद पिलाओ।

लिहाज़ा आप सल्लल्लाहु अलैहि विसल्लम के पास जो भी व्यक्ति किसी शरई मसले या अपने भाई के दुनियावी फायदे के बारे में पूछने के लिए आता तो आप सल्लल्लाहु अलैहि विसल्लम उसके लिए अपना सीना खोल देते और उसे संतोषजनक जवाब देते जिससे वह खुश हो जाता और उसे अल्लाह की तरफ से वही (संदेश) समझता। लिहाज़ा जो भी नबी ए करीम सल्लल्लाहु अलैहि विसल्लम उसे सलाह देते उसका पालन करता।

मैंने किसी किताब में पढ़ा है कि जिसि व्यक्ति का पेट खराब हो गया हो वह शहद पियें। क्योंकि शहद पीने से दस्त होंगे जिसके द्वारा धीरे-धीरे वे सभी कीटाणु बाहर निकल जाएंगे जो पेट की खराबी कारण हुए हैं। यहाँ तक कि वह पूरे तौर पर ठीक हो जाएगा।

शहद किसी बीमारी के लिए किसी समय में किसी व्यक्ति के लिए किसी हद तक एक इलाज है। ऐसा नहीं है कि यह हर समय सभी लोगों के लिए सभी बीमारियों का इलाज है। जैसा कि इंसानी तबीयत और कुरआन और सुन्नत का थोड़ा सा भी ज्ञान रखने वाले सभी लोग इसे जानते हैं।

उसे शहद पिलाओ।

हमें जो दलीलों और अनुभवों से साबित हुआ है वह यह के शहद में बहुत से लोगों और बहुत सी लाइलाज बीमारियों का इलाज है। लेकिन तमाम बीमारियों और सब लोगों के लिए नहीं। बल्कि मामला ऐसे ही है जैसा कि हमने ऊपर बयान किया।

इस वसियत से हमें मालूम होता है कि नबी ए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का इस पर कितना विश्वास था कि शहद आमतौर पर पेट की बीमारियों का लाभदायक इलाज है। लेकिन यह बात इसके खिलाफ नहीं है कि शहद के अलावा दूसरी दवाईयाँ न हों और न ही इस बात के खिलाफ है कि नबी ए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के समय में मौजूदा बीमारियों के अलावा दूसरी बीमारियाँ न हो जिनका शहद से इलाज नहीं हो सकता। क्योंकि क़ुरआन और सुन्नत में कोई ऐसी दलील मौजूद नहीं है जो सामान्यता (उमूम) को बताती हो।

गुस्सा शैतान से है।

عَنْ أَبِي ذَرٍّ - رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ - قَالَ: إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ لَنَا: "إِذَا غَضِبَ أَحَدُكُمْ وَهُوَ قَائِمٌ فَلْيَجْلِسْ، فَإِنْ ذَهَبَ عَنْهُ الْغَضَبُ وَإِلَّا فَلْيَضْطَجِعْ

तर्जुमा: ह़ज़रत अबू ज़र रद़ियल्लाहु अ़न्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: "जब तुम में से किसी को गुस्सा आ जाए और वह खड़ा हो तो बैठ जाए। अगर बैठ जाने से गुस्सा खत्म हो जाए तब तो ठीक है वरना तो लेट जाए।"

गुस्सा शैतान से है।

وَعَنْ أَبِي وَائِلِ الْقَاصُّ قَالَ: دَخَلْنَا عَلَى عُرْوَةَ بْنِ مُحَمَّدِ السَّعْدِيِّ فَكَلَّمَهُ رَجُلٌ فَأَغْضَبَهُ، فَقَامَ فَتَوَضَّأَ، ثُمَّ رَجَعَ وَقَدْ تَوَضَّأَ فَقَالَ: حَدَّثَنِي أَبِي عَنْ جَدِّي عَطِيَّةَ، قَالَ : قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "إِنَّ الْغَضَبَ مِنْ الشَّيْطَانِ، وَإِنَّ الشَّيْطَانَ خُلِقَ مِنْ النَّارِ، وَإِنَّمَا تُطْفَأُ النَّارُ بِالْمَاءِ، فَإِذَا غَضِبَ أَحَدُكُمْ فَلْيَتَوَضَّأْ

तर्जुमा: और ह़ज़रत अबू वाईल क़ास (कहानी सुनाने वाले) बयान करते हैं कि हम अ़म्र बिन मुह़म्मद सअ़दी के पास गाए। तो एक व्यक्ति ने उनसे कुछ बात कही जिसके कारण उन्हें गुस्सा आ गया तो उस पर उन्होंने वुज़ू किया। जब वह वुज़ू करके वापस आए तो बोले मुझसे मेरे पिता ने मेरे दादा ह़ज़रत अ़तियह से उल्लेख ह़दीस़ बयान की कि उन्होंने कहा कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया:"गुस्सा शैतान से है और शैतान आग से पैदा किया गया है और आग पानी से बुझाई जाती है। लिहाज़ा जब तुम में से किसी को गुस्सा आ जाए तो फौरन वुज़ू कर ले।"

गुस्सा एक बहुत बड़ी आफत है जो इंसान की बुद्धि छीन लेता है और उसकी प्रेमपूरण भावनाओं को नष्ट करके उसके अंदर दुख और गम भर देता है।

गुस्सा शैतान से है।

गुस्सा (क्रोध) जिस तरह मानसिक और मनोवैज्ञानिक ताकतों को प्रभावित करता है इसी तरह तंत्रिका शक्तियों और रक्त वाहिकाओं को भी प्रभावित करता है। जिससे क्रोधी व्यक्ति के इन अंगों में बैचेनी पैदा हो जाती है, ब्लड प्रेशर हाई हो जाता है और दिल की धड़कने बढ़ जाती हैं।

लिहाज़ा मुसलमान -बल्कि हर इंसान- को चाहिए कि वह जहाँ तक हो सके हमेशा गुस्से के कारणों और उसकी जगहों से बचे।
ज़्यादातर बीमारियाँ जो इंसान को लगती हैं वह गुस्से की वजह से होती हैं जैसा के डॉक्टर्स कहते हैं।

ए मेरे प्यारे मुसलमान भाई! ईमान और हिम्मत और हौसले के एतवार से ताकतवर मोमिन वही है जो गुस्से के समय अपने आप को काबू में रखे, बिखिरने से पहले अपने आपको संभाल ले और खामोशी और इत्मीनान व सुकून के साथ सामने वाले का सामना करने से अपने आप को पीछे हटा ले ताकि उसकी बुराई से भी महफूज रहे और अपने गुस्से की आफत से भी जिसने उसे पागल कर दिया है।
गुस्से का एक इलाज यह भी है कि शैतान से अल्लाह की पनाह (यानी शरण) मांगे। क्योंकि जो अल्लाह की पनाह मांगता है अल्लाह उसे अपनी पनाह में ले लेता है और जिस चीज से पनाह मांग रहा है उससे उसकी हिफाजत फरमाता है।

अपने आप को बद्दुआ (शाप) न दो।

عَنْ جَابِرٍ - رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ - أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: "لَا تَدْعُوا عَلَى أَنْفُسِكُمْ وَلَا تَدْعُوا عَلَى أَوْلَادِكُمْ، وَلَا تَدْعُوا عَلَى أَمْوَالِكُمْ، لَا تُوَافِقُوا مِنْ اللَّهِ تَبَارَكَ وَتَعَالَى سَاعَةً يُسْأَلُ فِيهَا عَطَاءٌ فَيَسْتَجِيبَ لَكُمْ"

तर्जुमा: हज़रत जाबरि रद़यिल्लाहु अ़नहु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया:" अपने आप को बद्दुआ (शाप) न दो। अपनी औलाद को बद्दुआ न दो। अपने खादमिों (नौकरों) को बद्दुआ न दो। और न ही अपने धन को बद्दुआ दो। क्योंकि कहीं ऐसा न हो कि वह अल्लाह की तरफ से कबूलयित की घड़ी हो तो तुम्हारी बद्दुआ़ कबूल हो जाए।"

अपने आप को बद्दुआ (शाप) न दो।

इंसान फितिरती तौर पर जल्दबाज़, अक्सर नाशुक्रा (कृतघ्न) और बहुत बड़ा झगड़ालू है यहाँ तक कि खुद के साथ भी। कभी-कभी मामूली सी बात पर बहुत ज़्यादा गुस्सा कर बैठता है और गुस्सा दिलाने वाले व्यक्ति पर भड़क जाता है यहाँ तक कि वह उसकी सारी भलाईयों को भुला देता है। उसका कुछ भी सम्मान नहीं करता है बल्कि उसे गालियाँ देता है और उसको तबाही और बर्बादी की बद्दुआएं देता है। और कभी-कभार तो उस पर इतना गुस्सा सवार हो जाता है कि अपने आप को ही ऐसी ऐसी बद्दुआएं देता है कि होश में आ जाए तो बड़ा शर्मिंदा हो।

गुस्सा इंसान की बुद्धि छीन लेता है। उसके होश व हवास खो देता है और उसे पूरे तौर पर अपने बस में करके उसे कठपुतली बना देता है। फिर तो वह ऐसे ऐसे काम करता है कि अपने आपको तबाही और बर्बादी के गडडे में डाल देता है।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि विसल्लम हमसे अपनी बहुत ज़्यादा मोहब्बत और प्यार की वजह से इरशाद फरमा रहे हैं कि अपने आपको बद्दुआ़ न दो। यानी गुस्सा या मायूसी या तकलीफों से परेशान हो कर कभी अपने लिए बुराई या बर्बादी की न दुआ़ करो। क्योंकि एक सच्चा मोमिन अपने नफ्स को अपने नफ्स से ही मारता है।

अपने आप को बद्दुआ (शाप) न दो।

ऐसे नफ़्स से जो हिम्मत और हौसले और अल्लाह पर भरोसे से भरपूर होता है। और अपने ऐसे ही नफ़्स के द्वारा अपने नफ़्स का उन आफतों से इलाज करता है जो ईमान की साफ़-सुथराई और विश्वास की चमक को गंदा कर देती हैं।

कोई भी अकलमंद व्यक्ति कभी अपने आप या अपनी औलाद को बद्दुआ न देगा भले ही वे कितने ही बुरे हालात में फंसा हो। भले ही उसे कितना ही ऐसा लगता हो कि गुस्सा केवल ऐसा करने से ही खत्म होगा।

तथा इस ह़दीस़ शरीफ से यह भी सबक मिलता है कि बंदे को चाहिए कि वह हमेशा अपने अल्लाह की बारगाह में अदब और एहतराम से पेश आए। लिहाज़ा वह उससे ऐसी चीज न मांगे जिसे वह अपनी सलामती के समय अपने लिए या अपनी औलाद या अपने धन के लिए पसंद नहीं करता हो। लिहाज़ा अगर वह अपने आप को या अपने बच्चों को या अपने धन को बद्दुआ़ दे तो यह एक तरह से अल्लाह की बारगाह में बेअदबी से पेश आना है जिसमें बहुत ही बड़ा गुनाह है जिसका आप अंदाज़ा भी नहीं लगा सकते। क्योंकि इस संसार को पैदा करने वाले, सर्वशक्तिमान, अकेले पूजा के योग्य अल्लाह की बारगाह में बेअदबी से बढ़कर कोई गुनाह नहीं हो सकता।

जिसने भी अपने किसी भाई पर अत्याचार किया हो (या उसका अधिकार मारा हो) तो उसे चाहिए कि उससे (इस दुनिया में ही) माफ कराले।

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ - رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ - أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: "مَنْ كَانَتْ عِنْدَهُ مَظْلَمَةٌ لِأَخِيهِ فَلْيَتَحَلَّلْهُ مِنْهَا؛ فَإِنَّهُ لَيْسَ ثَمَّ دِينَارٌ وَلَا دِرْهَمٌ مِنْ قَبْلِ أَنْ يُؤْخَذَ لِأَخِيهِ مِنْ حَسَنَاتِه، فَإِنْ لَمْ يَكُنْ لَهُ حَسَنَاتٌ أُخِذَ مِنْ سَيِّئَاتِ أَخِيهِ فَطُرِحَتْ عَلَيْهِ

तर्जुमा: ह़ज़रत अबू हुरैरा रद़ियल्लाहु अ़न्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया:"जिसने भी अपने किसी भाई पर अत्याचार किया हो (या उसका अधिकार मारा हो) तो उसे चाहिए कि उससे (इस दुनिया में ही) माफ कराले। इसलिए कि आखिरत में रूपए-पैसे नहीं होंगे।

जिसने भी अपने किसी भाई पर अत्याचार किया हो (या उसका अधिकार मारा हो) तो उसे चाहिए कि उससे (इस दुनिया में ही) माफ कराले।

इससे पहले (माफ कराले) कि उसके मज़लूम भाई को उसकी नेकियों में से अधिकार दिलाया जाए और अगर उसके पास नेकियाँ न होंगी तो उस (मज़लूम) भाई की बुराइयाँ उस पर डाल दी जाएंगी।"

ऐसा लगता है कि दुनिया को रुखसत कहने वाले व्यक्ति की यह वसियत है जो अपने अंदर बड़ी महत्वपूर्ण और ऐसी चीजें लिए हुए है जिनका ख्याल रखना बहुत जरूरी है। लेकिन इंसान अल्लाह से दूरी, दुनिया से बहुत ज़्यादा लगाओ, अपनी ख्वाहिश और स्वार्थ की वजह से उन्हें भूल जाता है या फिर भुला देता है। उन्हीं चीजों में से एक मोमिनो के दरमियान सच्चा भाईचारा और उससे संबंधित अधिकार हैं जिनको अदा करना जरूरी है। तथा उससे संबंध कुछ आदाब भी हैं जिनका ख्याल करना और जिनकी सुरक्षा करना जरूरी है।

उन्हीं चीजों में से मुसलमान और गैर मुसलमान सभी लोगों के बीच न्याय को स्थापित करना, उन नियमों को पहचानना जिन पर वह आधारित है और बेहतर तरीके से उसको लागू करना भी है ताकि इस धरती पर बसने वाले सभी लोगों के बीच अमन और शांति कायम रहे।

जिसने भी अपने किसी भाई पर अत्याचार किया हो (या उसका अधिकार मारा हो) तो उसे चाहिए कि उससे (इस दुनिया में ही) माफ कराले।

उन्हीं चीजों में से यह भी है कि जब कोई व्यक्ति अपने भाई के हक में कोई गलती कर दे तो उसके लिए जरूरी है कि वह उससे माफी मांगे और जहाँ तक हो सके भलाई से उसका बदला दे। और अगर यह नहीं कर सकता तो सम्मान और अदब व एहतराम के साथ माफी ही मांग ले।

ज़ुल्म अ़रबी भाषा का शब्द है। इसके के माना है किसी चीज को उसके अलावा की जगह में रखना। और यही माना रोकने यह कमी करने का है। ज़ुल्म (अत्याचार या अंधेरा) को ज़ुल्म इसलिए कहा जाता है कि वह अंधेरे की तरह होता है। क्योंकि हक़ीक़त को छुपाया जाता है और अधिकारों को नष्ट किया जाता है। ह़दीस़ शरीफ में " मज़लमिह" का शब्द आया है जो कि अ़रबी भाषा का शब्द है। इसके माना हैं अत्याचार।और अत्याचार दो तरह का होता है:

एक भौतिक अत्याचार: यह पैसों या सामान वगैरह निजी चीज़ों में होता है।

दूसरा आध्यात्मिक अत्याचार: यह इज़्जत व आबरू, सम्मान और उन आदतों में होता है जिनमें हर किसी को सम्मान और आज़ादी (स्वतंत्रता) के मामले में उसका अधिकार देना लाजमी होता है। और उन जैसे अन्य अधिकारों में जिन को खरीदा नहीं जा सकता बल्कि उनको अदा करना जरूरी है।

अल्लाह के ज़िक्र के अलावा बहुत ज़्यादा बोलने से बचो।

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ - رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ - أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: "مَنْ كَانَتْ عِنْدَهُ مَظْلَمَةٌ لِأَخِيهِ فَلْيَتَحَلَّلْهُ مِنْهَا؛ فَإِنَّهُ لَيْسَ ثَمَّ دِينَارٌ وَلَا دِرْهَمٌ مِنْ قَبْلِ أَنْ يُؤْخَذَ لِأَخِيهِ مِنْ حَسَنَاتِهِ، فَإِنْ لَمْ يَكُنْ لَهُ حَسَنَاتٌ أُخِذَ مِنْ سَيِّئَاتِ أَخِيهِ فَطُرِحَتْ عَلَيْهِ

तर्जुमा: ह़ज़रत अ़ब्दुल्लह बिन उ़मर रद़ियल्लाहु अ़न्हुमा बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: "अल्लाह के ज़िक्र के अलावा बहुत ज़्यादा बोलने से बचो। क्योंकि अल्लाह के ज़िक्र के अलावा ज़्यादा बात करना दिल को सख़्त (कठोर) कर देता है। और बेशक अल्लाह से सबसे दूर कठोर दिल वाला होता है।"

अल्लाह के ज़िक्र के अलावा बहुत ज़्यादा बोलने से बचो।

नबी ए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि विसल्लम हमें इस ह़दीस़ शरीफ में इस बात की नसीहत फरमा रहे हैं कि हम ऐसी बात न करें जिसमें अल्लाह का ज़िक्र न हो और अगर करें भी तो ज़्यादा न करें बल्कि सिर्फ इतनी करें जिससे मकसद पूरा हो जाए। लिहाज़ा सबसे बेहतर बात वह है जिसमें शब्द कम और माना ज़्यादा हों। तथा अक्लमंदी भी कम बोलने में ही है। नबी ए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि विसल्लम ने अल्लाह के ज़िक्र के अलावा ज़्यादा बोलने से मनादी की वजह यह बताई कि इससे दिल सख्त होता है।

यानी बिना वजह की बात करने से तबीयत में सख्ती (कठोरता), अखलाक में बुराई और दिल में अंधेरा होता है। और जब दिल में अंधेरा हो जाता है तो वह कठोर (सख्त) हो जाता है और जब दिल कठोर हो जाता है तो वह अपना संतुलन खो बैठता है और नष्ट हो जाता है। ऐसी स्थिति में ऐसे दिल वाला इंसान अल्लाह से सबसे ज़्यादा दूर हो जाता है जिस से बढ़कर कोई बुराई नहीं हो सकती।

अल्लाह के ज़िक्र के अलावा बहुत ज़्यादा बोलने से बचो।

नेक लोगों की बातचीत अल्लाह का ज़िक्र हुआ करती है। क्योंकि उसमें बिना वजह की बात नहीं होती है जो नुकसान पहुंचाती है और किसी तरह का फायदा नहीं देती। बल्कि वे लोग तो बिना वजह की बात करने से सबसे ज़्यादा दूर रहते हैं। क्योंकि वह हमेशा अपने आप को ठीक काम और सही बात में व्यस्त रखते हैं। क्योंकि अगर आप अपने आप को ठीक काम और सही बात में व्यस्त नहीं रखेंगे तो आप गलत काम में पड़ जाएंगे। एक सहीह़ हदीस पाक में आया है कि "अल्लाह उस व्यक्ति पर रहम (दया या कृपा) फरमाए जो बोले तो फायदे में रहे या चुप रहे तो बचा रहे।" और एक कहावत भी है कि जो ज़्यादा बोलता है वह गलती भी ज़्यादा करता है।

सात तबाह करने वाले गुनाहों से बचो।

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: "اجْتَنِبُوا السَّبْعَ الْمُوبِقَاتِ" قَالُوا: يَا رَسُولَ اللَّهِ! وَمَا هُنَّ، قَالَ: " الشِّرْكُ بِاللَّهِ وَالسِّحْرُ وَقَتْلُ النَّفْسِ الَّتِي حَرَّمَ اللَّهُ إِلَّا بِالْحَقِّ وَأَكْلُ الرِّبَا وَأَكْلُ مَالِ الْيَتِيمِ وَالتَّوَلِّي يَوْمَ الزَّحْفِ وَقَذْفُ الْمُحْصَنَاتِ الْمُؤْمِنَاتِ الْغَافِلَاتِ

तर्जुमा: ह़ज़रत अबू हुरैरा रद़यिल्लाहु अ़न्हु बयान करते हैं कि नबी ए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया:"सात तबाह करने वाले गुनाहों से बचो।" सह़ाबा ए करिम ने पूछा:" ए अल्लाह के रसूल! वे गुनाह क्या हैं?"नबी ए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया:

सात तबाह करने वाले गुनाहों से बचो।

:"अल्लाह के साथ किसी को साझेदार करना (अल्लाह के साथ शिर्क करना), जादू-टोना करना, किसी को नाहक क़त्ल करना कि जिससे अल्लाह ने मना क्या है, सूद खाना, यतीम (अनाथ) का माल खाना,युद्ध से भाग जाना और पवित्र व भोली-भाली मुसलमान महिलाओं पर (गुनाह की) तोहमत लगाना।"

यह वसियत लगभग हर उस बुराई को शामिल है जिससे रुकना चाहिए और जिसके करीब नहीं जाना चाहिए। अल्लाह के साथ शिर्क करना सबसे बड़ा गुनाह है और तमाम बुराइयों को शामिल है बल्कि वह बुराई पर बुराई है। फिर इसके बाद जिक्र होने वाली चीजों की बुराई का नंबर आता है।

नबी ए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की यह महान आदत थी कि आप अपने भाषण में कुछ भलाईयों का जिक्र करते जिनके करने का हुक्म देते और कुछ बुराइयों का ज़िक्र करते जिनसे बचने का आदेश देते जैसे कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम फरमाते हैं:

".سَبْعَةٌ يُظِلُّهُمُ اللَّهُ فِي ظِلِّهِ يَوْمَ لَا ظِلَّ إِلَّا ظِلُّهُ..."

तर्जुमा: सात लोगों को अल्लाह उस दिन अपनी कृपा की छांव में रखेगा जिस दिन सिवाय उसकी कृपा की छांव के कोई ओर छांव न होगी।"

सात तबाह करने वाले गुनाहों से बचो।

एक दुसरी जगह नबी ए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया:

أَرْبَعٌ مَنْ كُنَّ فِيهِ كَانَ مُنَافِقًا خَالِصًا

तर्जुमा:"जिसमें चार आदतें हों वह पक्का मुनाफिक (दो रुखा) है।"

और यहाँ पर इरशाद फ़रमाते हैं: "सात तबाह करने वाले गुनाहों से बचो।" तबाह करने वाले केवल सात ही गुनाह नहीं हैं लेकिन यहाँ पर आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने सात ही का जिक्र फरमाया ताकि ये आसानी के साथ याद हो जाएं।

इस वसियत पर पहली नजर पड़ते ही यह पता चल जाता है कि शिर्क के बाद जो चीजें बयान हुई हैं उनमें गुनाह की तरतीब का ख्याल नहीं रखा गया है उदाहरण के लिए जब शिर्क के बाद जिक्र होने वाले गुनाह पर नजर करेंगे तो आपको लगेगा कि यह बाद में आने वाला गुनाह से ज़्यादा बड़ा गुनाह है लेकिन जब उसके बाद वाले को देखेंगे तो आप कहेंगे कि यह पहले वाले से बड़ा गुनाह है। और इसी तरह बाकी गुनाहों में भी यही बात है। और सच यह है कि इन गुनाहों में से हर एक अलग अलग एतबार से अपने सामने वाले गुनाह से बड़ा गुनाह है लेकिन इकट्ठा तौर पर शिर्क के बाद सभी एक जैसे गुनाह और बुराई हैं।

सात तबाह करने वाले गुनाहों से बचो।

नबी ए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के फरमान: "बचो।" का मतलब यह है कि पूरी सावधानी रखो। और दुनिया और आखिरत में तबाह और बर्बाद कर देने वाले गुनाहों से अपने आप को दूर रखो। क्योंकि जैसा कि हमें मालूम है दुनिया में भी अज़ाब होता है और आखिरत में भी होगा। और आखिरत का अज़ाब ही बड़ा है। सर्वशक्तिमान अल्लाह पाक के साथ किसी को शरीक करना यानी साझेदार ठहराना बहुत ही बड़ी आफत और बहुत बड़ा गुनाह है जो कभी माफ नहीं किया जाएगा। अल्लाह ऐसे किसी भी पुरुष या महिला का कोई कार्य कुबूल नहीं करेगा। क्योंकि कार्य के सही होने और उसके कुबूल होने के लिए शुद्ध ईमान का होना जरूरी है।

इस वसियत में दूसरा हलाक कर देने वाला गुनाह जिससे से बचने का नबी ए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आदेश दिया है जादू-टोना करना है। यह भले ही कुफ्र नहीं है लेकिन उससे कम भी नहीं है। जादूगरों को आखिरत में अल्लाह की कृपा नसीब नहीं होगी बल्कि उन्हें तो उनके फसाद की वजह से अज़ाब (सज़ा) पर अज़ाब दिया जाएगा। फिरऔन की कॉम एक प्रकार का जादू जानती थी जिसे बाबूली नहीं जानते थे। तो अल्लाह ने अपने नबी हज़रत मूसा को ऐसा चमत्कार व करिश्मा दिया जिसके द्वारा उन्होंने फिरऔन की कॉम की साज़िशों और चालों को मिट्टी में मिला दिया।

सात तबाह करने वाले गुनाहों से बचो।

जादूगर का हुक्म यह है कि अगर लोगों को इससे परेशानी पहुंचे तो उससे तौबा करने को कहा जाए। अगर तौबा कर ले और अपनी मक्कारी से बाज आ जाए तो उसे अल्लाह के फैसले पर छोड़ दिया जाए। और अल्लाह ही बेहतरीन फैसला करने वाला है। और अगर तौबा न करे तो उसे क़त्ल कर दिया जाए। मुसलमान को चाहिए कि वह तमाम जादूगरों से दूर है। और उनसे कोई संबंध न रखे। और न ही उन लोगों के पास जाए जो यह दावा करते हैं कि उनका जिन्नों से संपर्क है। वे उन्हें अप्रकट (गुप्त, अनदेखी) चीजें बताते हैं। उनाका काम करते हैं। जो वे उनसे मांगें उसे पूरा करते हैं। गायब (अनुपस्थिति) व्यक्ति को सामने ला देते हैं। वगेरह वगेरह झूठे दावे करते हैं।

\

और न ही फाल निकालने वाले के पास जाए जो सितारों को देखकर कंकरियों वगैरह से फाल खोलता है जिसे कोई सही बुद्धि स्वीकार नहीं कर सकती।

तीसरा हलाक कर देने वाला गुनाह किसी को नाहक क़त्ल करना है। यह उन तमाम गुनाहों से बुरा गुनाह है जो एक इंसान अपने इंसान ही भाई के हक में करता है। तो कौन सी जमीन उसे स्वीकार करेगी करेगी और कौन सा आसमान उसे छांव देगा जो बिना जमीर के अपने इंसान भाई को नाहक क़त्ल कर देता है। क़ाबिल और हाबिल की कहानी में अल्लाह ने क़त्ल को बहुत बढ़ा जुर्म व पाप बताया है। अतः इस कहानी के आखिर में अल्लाह फरमाता है:

सात तबाह करने वाले गुनाहों से बचो।

مِنْ أَجْلِ ذَٰلِكَ كَتَبْنَا عَلَىٰ بَنِي إِسْرَائِيلَ أَنَّهُ مَنْ قَتَلَ نَفْسًا بِغَيْرِ نَفْسٍ أَوْ فَسَادٍ فِي الْأَرْضِ فَكَأَنَّمَا قَتَلَ النَّاسَ جَمِيعًا وَمَنْ أَحْيَاهَا فَكَأَنَّمَا أَحْيَا النَّاسَ جَمِيعًا

(सूरह: अल-माइदह, आयत संख्या: 32)

तर्जुमा: इस वजह से हमने बनी इस्राइल पर लिख दिया कि जिसने बग़ैर जान के बदले कोई जान क़त्ल की या जमीन में फसाद किए तो गोया उसने सब लोगों को क़त्ल किया। और जिसने एक जान को जिला लिया उसने गोया सब लोगों को जला लिया।" (तर्जुमा: कंज़ुलईमान)

अत:एक जान के क़त्ल करने को सब लोगों का क़त्ल करना बताया गया ताकि यह पता चल सके कि नाहक क़त्ल करना कितना बड़ा जुर्म व पाप है।

नाहक क़त्ल करने का सबसे गंभीर रूप यह है कि कोई व्यक्ति फकीरी के डर से अपनी औलाद या शर्म की वजह से अपनी बेटी को कत्ल करदे जैसा कि जाहिली जमाने में अरब के कुछ लोग किया करते थे। और उससे भी बड़ा जुर्म यह है कि अल्लाह की तक़दीर (भाग्य) से तंग व परेशान और उसकी कृपा या रहमत से मायूस होकर इंसान खुदकुशी करले।

सात तबाह करने वाले गुनाहों से बचो।

चौथा हलाक करने वाला गुना सूद खाना है। यह इंसान को दुनिया और आखरित में तबाह करने वाला सबसे बड़ा गुनाह है। अल्लाह ने सूद खाने वालों की कयामत के दिन की स्थिति बियान की है जिससे दिल दहल जाते हैं। अल्लाह फरमाता है:

.الَّذِينَ يَأْكُلُونَ الرِّبَا لَا يَقُومُونَ إِلَّا كَمَا يَقُومُ الَّذِي يَتَخَبَّطُهُ الشَّيْطَانُ مِنَ الْمَسِّ

(सूरह: अल-बक़रह, आयत संख्या:275)
तर्जुमा: "वे जो सूद खाते हैं कयामत के दिन न खड़े होंगे मगर जैसे खड़ा होता है वह जिसे आसैब ने छूकर पागल कर दिया हो।" (तर्जुमा: कंज़ुलईमान)
लिहाजा बहुत ज़्यादा डर और होलनाकी के कारण वे अपनी क़बरों से पागलों की तरह उठेंगे और उनके पेट उनके आगे होंगे जैसे उह़द का पहाड़ जैसे कि कुछ ह़दीसों आया है।

सूदखोर मूरख इंसान है। क्योंकि वह समझता है कि सूद लेने में बहुत ज़्यादा फायदा है कि वह अपना माल किसी को इस शर्त पर कर्ज देता है कि वह उससे ज़्यादा उसे वापस देगा हालांकि हकीकत में यह बहुत बड़ा नुकसान और घटा है। क्योंकि किसी न किसी तरह वह हराम का माल चला ही जाता है और अगर बाकी रहे तो न उसे फायदा देता है और न ही उसके मरने के बाद उसके वारिसों को।

सात तबाह करने वाले गुनाहों से बचो।

अगर यह व्यक्ति अकलमंद होता तो जरूर यह जान लेता की भलाई (बिना सूद के) अच्छा कर्ज देने में ही है। क्योंकि वह यह एक ऐसा महान सदक़ा है जिससे अल्लाह की नाराजगी दूर होती है और जिससे उस व्यक्ति को दुनिया और आखिर में फायदा पहुंचता है। लेकिन सूद के साथ क़र्ज़ देने में ऐसा नहीं है। क्योंकि उसमें सिर्फ नुकसान ही नुकसान है।

सूद का लेनदेन करना एक तो बहुत बड़ा गुनाह है जैसा कि हमने ऊपर बयान किया। तथा इसमें माल की बर्बादी भी है जिसे पैदावार बढ़ाने और मजदूरों को देने में इस्तेमाल करना चाहिए जिसमें की बहुत बड़ा फायदा है।

पांचवाँ तबाह कर देने वाला गुनाह अनाथ का माल खाना है। इसमें भी सूद खाने से कम गुनाह नहीं है बल्कि ये तो उससे भी बड़ा गुनाह है। क्योंकि अल्लाह ने इस पर सख्त चेतावनी दी है। अल्लाह फरमाता है:

إِنَّ الَّذِيـنَ يَأْكُلُـونَ أَمْـوَالَ الْيَتَامَـىٰ ظُلْـمًا إِنَّمَـا يَأْكُلُـونَ فِي بُطُونِهِـمْ نَـارًا وَسَيَصْلَوْنَ سَعِيرًا

(सूरह: अल-निसाअ, आयत संख्या: 10)

तर्जुमा: "वह जो यह अनाथों का माल नाहक खाते हैं वह तो अपने पेटों में निरी आग भरते हैं और कोई दम जाता है कि वे भड़कती आग में झुलसाए जाएंगे।"

तो पता चला कि अनाथ का माल एक आग है जो भी उसकी तरफ खयानत का हाथ बढ़ाता है उसे जलाकर रख देता है या जमीन में धंसा देता है। लिहाजा जो उसे नाहक खाएगा दुनिया में भी चलेगा और आखिरत में भी जहन्नम की आग में झुलसाया जाएगा। और ताकि कोई इसका खबीस गुनाह को करने की कोशिश न करे इसलिए अल्लाह ने इस चेतावनी से पहले एक ओर चेतावनी दी। अतः अल्लाह ने ऊपर बयान की हुई आयत से पहले फरमाया:

وَلْيَخْشَ الَّذِينَ لَوْ تَرَكُوا مِنْ خَلْفِهِمْ ذُرِّيَّةً ضِعَافًا خَافُوا عَلَيْهِمْ فَلْيَتَّقُوا اللَّهَ وَلْيَقُولُوا قَوْلًا سَدِيدًا

(सूरह: अल-निसाअ, आयत संख्या: 9)
तर्जुमा: "और डरें वे लोग अपने बाद कमजोर औलाद छोड़ते तो उनका कैसा उन्हें खतरा होता। तो चाहिए कि अल्लाह से डरें और सीधी बात करें।" (तर्जुमा: कंज़ुलईमान) तो चाहिए कि वे अल्लाह के अधिकार का ख्याल रखें। अपने मातहत अनाथों के अधिकार में अल्लाह से डरें, उनकी और उनकी सम्पत्ति की सुरक्षा करें और उनके साथ ऐसा व्यवहार करें जैसा कि वे अपने बच्चों के साथ चाहते हैं।

अनाथों का माल खाने से सबसे ज़्यादा अल्लाह से डरने वाले सहाबा ए करिाम रद़ियल्लाहु अ़न्हुम थे खासकर उनका नाहक माल खाने के बारे में आयत उतरने के बाद।

सात तबाह करने वाले गुनाहों से बचो।

यतीम के साथ सबसे बेहतरीन भलाई और नेकी यह है कि उसकी अच्छी तरह से देखभाल की जाए यहाँ तक कि अच्छी तरह से उसमें अपने मामले संभालने की क्षमता हो जाए। यही अमानत अल्लाह ने अनाथों के जिम्मेदारों के कंधों पर रखी है। लिहाज़ा अगर इसमें कोताही करेंगे तो उसी के हिसाब से उन्हें अल्लाह के सामने उसका जवाब देना होगा।

छटा हलाक कर देने वाला गुनाह मैदान-ए-जंग (युद्ध के मैदान) से भाग जाना है। यह एक बड़ा गुनाह है जबकि इससे मुसलमानों के समूह से जा मिलकर सहायता मांगना या पीछे हटकर दुश्मन को फांसना और उसको हराना मकसूद न हो।

युद्ध के मैदान में डटे रहना एक बड़ी जिम्मेदारी है और यह मोमिन के लिए एक सम्मान और अल्लाह के साथ उसके सच होने के सबूत है। जबकि युद्ध का मैदान छोड़कर भाग जाने में बुजदिली, जिल्लत व रुसवाई, मुसलमानों को तकलीफ देना और उनके साथ विश्वासघात करना है। क्योंकि इससे उनमें फूट पड़ेगी, उनकी हिम्मत टूटेगी और दुश्मन को डटे रह जाने वाले मुसलमानों पर हमला करने की हिम्मत मिलेगी।

सात तबाह करने वाले गुनाहों से बचो।

लेकिन अक्सर ऐसा होता है कि भागने वालों पर ही भागने का बवाल आ गिरता है। और कभी-कभार तो इसकी वजह से वह बड़ी बुरी तरह मारे जाते हैं। और बुजदिलों की मौत मरते हैं जिनका दुनिया में कोई चर्चा नहीं रहता। और आखिरत में भी उन्हें लानत और जहन्नुम के अ़ज़ाब के अलावा कुछ नहीं मिलने वाला। युद्ध के मैदान में सबसे ज़्यादा डटे रहकर लड़ने वाले नबी ए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम वाले के सहाबा ए करिाम रद़ियल्लाहु अ़न्हुम थे। शहादत पाना उनकी आरज़ू और बड़ी सफलता थी। क्योंकि वह शहादत के सम्मान और मर्तबा और उसके सवाब को अच्छी तरह जानते थे। उनका नारा था कि मौत की आरज़ू करो ताकि ताकि तुम्हें हमेशा का जीवन नसीब हो।

सातवाँ तबाह कर देने वाला गुना पवित्र महिलाओं पर तोहमत लगाना है। यह भी बहुत बड़ा और खतरनाक जुर्म है। और इस्लामी समाज जो कि अच्छे अखलाक और बेहतरीन व्यवहार में दुसरे सभी समाजों में अलग हैसियत रखता है उसके लिए यह गुनाह सबसे ज़्यादा नुकसान दे और हानिकारक है। क़ुरआन पाक में पवित्र महिलाओं पर तोहमत लगाने के बारे में अल्लाह का फरमान है:

إِنَّ الَّذِيـنَ يَرْمُـونَ الْمُحْصَنَـاتِ الْغَافِـلَاتِ الْمُؤْمِنَـاتِ لُعِنُـوا فِي الدُّنْيَـا وَالْآخِـرَةِ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ

(सूरह: नूर, आयत संख्या: 23)

सात तबाह करने वाले गुनाहों से बचो।

तर्जुमा: "बेशक वे जो एब लगाते हैं अनजान पवित्र ईमान वालियों को उन पर लानत है दुनिया और आखिरत में। और उनके लिए बड़ा अज़ाब है।" (तर्जुमा: कंज़ुलईमान)

पवित्र औरतें यानी साफ-सुथरी महिलाएं। एब लगाने का मतलब उन पर बदकारी व ज़िना की तोहमत लगाना है जबकि वे उससे बरी और कोसों दूर हों। तोहमत लगाने वाले लोगों पर लानत होने का मतलब है कि दुनिया और आखिरत में वे अल्लाह की रहमत से दूर रहेंगे। लिहाजा इसमें उन लोगों के लिए सबक है जो लोगों की इज़्जत से खिलवाड़ करते हैं। और मुस्लिम समाज में बुराई फैलाना पसंद करते हैं।

पवित्र पुरुषों पर तोहमत लगाना भी पवित्र महिलाओं पर तोहमत लगाने ही की तरह है। लेकिन इस ह़दीस़ शरीफ में खासतौर पर पवित औरतों पर तोहमत लगाने के बारे में आया है। उसकी वजह यह है कि पुरुषों के प्रति महिलाओं पर ज़्यादा तोहमत लगाई जाती है। और यह ज़्यादा नुकसान दे और हानिकारक है। तथा इसका ज़्यादा बुरा अंजाम है। क्योंकि औरतों के बारे में जो कहा जाता है उससे उसे भी तकलीफ होती है, उसके पति, बच्चों और परिवार वालों को भी तकलीफ होती है। लेकिन मर्द का मामला ऐसा नहीं है जैसा कि यह जाहिर है इसके बताने की जरूरत नहीं। ज़िना (बदकारी) की तोहमत लगाना गुनाह में ज़िना करने की तरह है। इसी वजह से उसकी सजा कोड़े लगाना है।

सात तबाह करने वाले गुनाहों से बचो।

इस महान वसयित ने हमें भलाई और हदियत का रास्ता दखिाया, बुराइयों के स्थानों को बताया तथा मुख़्तसर तौर पर सभी बुरी वशिषताओं से खबर दार कर दयिा। क्योंकि यिह सात तबाह करने वाली आफतें साभी बड़े गुनाहों और बुरी आदतों की जड़ हैं। लहिाज़ा जो इन से सुरक्षति रहेगा वह उन सभी आफतों से सुरक्षति रहेगा जो दलिों को बूरा कर देती हैं, उन की चमक खत्म कर देती हैं, अच्छे अखलाक और बेहतरीन व्यवहारों का खात्मा कर देती हैं और नेक कामों को तबाह व बर्बाद कर देती हैं।

अल्लाह ने मुझे वह़ी फरमाई (संदेश भेजा) कि तुम लोग इनकिसारी (खाकसारी, विनम्रता, विनयशीलता) अपनाओ।

عَنْ عِيَاضِ بْنِ حِمَارٍ- رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ - أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: "إِنَّ اللَّهَ أَوْحَى إِلَيَّ أَنْ تَوَاضَعُوا حَتَّى لَا يَبْغِيَ أَحَدٌ عَلَى أَحَدٍ وَلَا يَفْخَرَ أَحَدٌ عَلَى أَحَدٍ

तर्जुमा: ह़ज़रत इ़याज़ बिन ह़िमार रद़ियल्लाहु अ़न्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया:"अल्लाह ने मुझे वह़ी फरमाई (संदेश भेजा) कि तुम लोग इनकिसारी (खाकसारी, विनम्रता, विनयशीलता) अपनाओ यहाँ तक कि कोई पर ज़्यादती न करे और न ही कोई किसी पर घमंड करे।"

अल्लाह ने मुझे वह़्ी फरमाई (संदेश भेजा) कि तुम लोग इनकिसारी (खाकसारी, विनम्रता, विनयशीलता) अपनाओ।

यह वसयित सभी प्रकार की भलाईयों को शामलि है। अल्लाह ने अपने प्यारे नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को इसका आदेश दयिा, इसे पूरी तरह उनके दलि में बठिाया, और बहुत से भाषणों और नसीहतों में इसे आपकी ज़ुबान पर जारी कयिा। लहिाज़ा आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इसे अपने व्यक्तत्वि और अपनी इबादत में अपनाया, और अपने साथ, लोगों के साथ और अल्लाह के साथ संबंधों की कुंजी बना लयिा। यह उन सभी वसयितों और वशिषताओं में सबसे महान वसयित व वशिषता है जन्हिें अल्लाह के प्यारे बंदे अपनाते हैं। अतः इसी से वे अल्लाह की नज़दीकी, उसकी मोहब्बत और उसकी खुशी के बुलंद स्थान पर पहुंचते हैं। क्योंकि इनकसिारी (खाकसारी, वनिम्रता, वनियशीलता) अल्लाह की शुध्द बंदगी का सच्चा अनुवाद है। वह इंसान के अपने आपको पहचानने और अपने अल्लाह के सामने अपनी हैसयित को जानने का पक्का सबूत है।

अल्लाह ने मुझे वही फरमाई (संदेश भेजा) कि तुम लोग इनकिसारी (खाकसारी, विनम्रता, विनयशीलता) अपनाओ।

सच्ची बंदगी इसमें है कि बंदा अपने अल्लाह के सामने खाकसारी (खाकसारी, विनम्रता, विनयशीलता) बर्ते यहाँ तक कि वह किसी इबादत व आज्ञाकारिता (फरमाबरदारी) में अपना कोई गुण न समझे और न ही सवाब का अपने लिए कोई अधिकार समझे। बल्कि उसके दिल में यह रहे कि: ए अल्लाह! आगर तू मुझे सवाब दे तो यह तेरी कृपा है। और अगर सज़ा दे तो यह तेरा न्याय है।

जब कोई बंदा कमाल के दर्जे चढ़ता है तो वह दुनिया से बलिकुल अलग हो जाता है और जो भी दुनिया की नेमत उसके पास आती-जाती है उसकी परवाह नहीं करता है। बल्कि उसका मकसद केवल अल्लाह की खुशी हासिल करना होता है।

इस वसियत में इनकिसारी (खाकसारी, विनम्रता, विनियशीलता) का मतलब लोगों के सामने इनकिसारी करना है। क्योंकि इसके आखिर में नबी ए करीम सल्लल्लाहु अलैहि विसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: "यहाँ तक कि कोई पर ज़्यादती न करे और न ही कोई किसी पर घमंड करे।"

अल्लाह ने मुझे वही फरमाई (संदेश भेजा) कि तुम लोग इनकिसारी (खाकसारी, विनम्रता, विनयशीलता) अपनाओ।

बंदा उस समय तक अल्लाह की एकता को मानने वाला नहीं हो सकता जब तक कि वह उसके साथ इनकिसारी से पेश न आए। क्योंकि यह कैसे हो सकता है कि वह उसके लिए एकता को भी माने और फिर उसके विशेष गुण यानी बुलंदी में उसका साझा भी करे।
याद रहे कि जिस इनकिसारी (खाकसारी, विनम्रता, विनयशीलता) की मांग है वह यह है जो किसी तरह के अपमान का कारण न हो, न ही उससे किसी के सम्मान पर हमला हो और न ही उसमें किसी तरह की बनावट हो।

अल्लाह उस समय तक दिलों में प्यार व मोहब्बत पैदा नहीं करता जबतक की लोग आपस में इनकिसारी (खाकसारी, विनम्रता, विनयशीलता) न करें, जब तक कि हर एक अच्छाई-बुराई और खुशी-गम में अपने ऊपर अपने भाई के अधिकार को न जान ले, जब तक कि लोग एक दूसरे पर अत्याचार, घमंड, और वंश पर गूरूर करना न छोड़ दें, जब तक कि वे अपने दिलों को अल्लाह की मोहब्बत पर इकट्ठा न कर लें और जब तक कि वे उसकी बुलंदी को मानते हुए आपस में इनकिसारी (खाकसारी, विनम्रता, विनयशीलता) न दिखाएं।

अल्लाह ने मुझे वही फरमाई (संदेश भेजा) कि तुम लोग इनकिसारी (खाकसारी, विनम्रता, विनयशीलता) अपनाओ।

जो अल्लाह की बारगाह में इनकिसारी (खाकसारी, विनम्रता, विनयशीलता) बरतता है वह प्यारा व बुलंद हो जाता है। और जो लोगों के साथ इनकिसारी (खाकसारी, विनम्रता, विनयशीलता) बरतता है वह उनके दिलों पर राज करता है। और जो अल्लाह के सामने घमंड करता है तो अल्लाह उसे धंसा देता है और सख्त बदला लेता है। और जो लोगों पर घमंड करता है वह ज़लील व रुसवा और खुजली वाले ऊंट जैसा हो जाता है जिसे अलग-थलग फेंक दिया जाता है।

दुनिया में इस तरह रहो जैसे कि तुम यात्री (अजनबी) या रास्ता पार करने वाले हो।

عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: أَخَذَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِمَنْكِبِي فَقَالَ: "كُنْ فِي الدُّنْيَا كَأَنَّكَ غَرِيبٌ أَوْ عَابِرُ سَبِيلٍ"
وَكَانَ ابْنُ عُمَرَ يَقُولُ: إِذَا أَمْسَيْتَ فَلَا تَنْتَظِرْ الصَّبَاحَ، وَإِذَا أَصْبَحْتَ فَلَا تَنْتَظِرْ الْمَسَاءَ، وَخُذْ مِنْ صِحَّتِكَ لِمَرَضِكَ، وَمِنْ حَيَاتِكَ لِمَوْتِكَ.

तर्जुमा: ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर रद़ियल्लाहु अ़न्हुमा बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने मेरा कंधा पकड़कर इरशाद फ़रमाया: "दुनिया में इस तरह रहो जैसे कि तुम यात्री (अजनबी) या रास्ता पार करने वाले हो।"

दुनिया में इस तरह रहो जैसे कि तुम यात्री (अजनबी) या रास्ता पार करने वाले हो।

और ह़ज़रत अ़ब्दुल्लह बनि उ़मर रद़यिल्लाहु अ़न्हुमा कहा करते थे: "शाम हो जाए तो सुबह का इंतजार मत करो। और सुबह हो जाए तो शाम का इंतजार मत करो। अपनी बीमारी से पहले तंदुरुस्ती में और मौत से पहले ज़न्दिगी में ही नेक काम करलो।"

दुनयिा आखरित की खेती और उसका रास्ता है। अगर मुसलमान उसमें ऐसे ही जदिगी बसर करे तो उसकी दुनयिा बहुत अच्छी रहेगी तथा उसमें उसकी ज़न्दिगी एक नैमत व खुशी की ज़न्दिगी होगी चाहे थोड़ी हो या ज़्यादा। लेकनि जतिनी ज़्यादा होगी उसके लिए उतना ही बेहतर होगा। क्योंक ह़दीस़ पाक में है: "तुम में सबसे बेहतर वह है जसिकी उम्र लंबी हो और अच्छा काम करे। और तुम में सबसे बुरा वह है जसिकी उम्र लंबी हो लेकनि बुरा काम करे।"

लहिाज़ा सबसे बेहतर वह शख्स है जो इस दुनयिा में रहकर आखरित को अपना मकसद बनाए रखे। मोमनि रहकर अपनी सारी कोशशि उसी में लगाए रखे।दुनयिा में इस तरह जदिगी बसर करे क उसकी कोई चाहत न रखे बल्क उसे रास्ता समझे जो उसे जन्नत से नज़दीक और जहन्नम से दूर कर देगा। उसकी नजर में धन ढलती छांव और उधार ली हुई वापस करने वाली चीज और उस पेड़ की तरह हो जसिसे कभी-कभार वह छांव लेता है।

दुनिया में इस तरह रहो जैसे कि तुम यात्री (अजनबी) या रास्ता पार करने वाले हो।

और अपने आपको हमेशा यात्रा में समझे। क्योंकि वह मौत की तरफ जा रहा है और आज या कल मर ही जाएगा। और अकलमंद के लिए कल बहुत करीब और मौत उसके के जूते के तसमे (फीते) से भी ज़्यादा नजदीक है।

अकलमंद वह है जो दुनिया की भीड़ भाड़ में मौत को न भूले। क्योंकि मौत की भूल इंसान को अल्लाह के रास्ते से भटका देती है और दुनिया और आखिरत में उसकी मंजिल तक पहुंचने में उसके आड़े आ जाती है। दुनिया में अजनबी या यात्री बनकर रहने के दो मतलब हैं:

पहला यह कि वह हमेशा अपने दिमाग में रखे कि वह अपने अल्लाह की तरफ वापस जा रहा है जैसा कि अजनबी या यात्री अपने शहर की तरफ वापस जाता है भले ही दोनों की वापसी में फर्क है। लिहाज़ा वह अपने आप से पूछे कि वह अपने अल्लाह की तरफ क्या लेकर वापस जा रहा है या कैसी हालत में वापस जा रहा है, क्या नेक काम करके वापस जा रहा है जो उसे उसके अल्लाह से नजदीक करेगा और उसके उस दिन अल्लाह के प्यारे बंदो के साथ उठने का कारण बनेगा जिसमें कि अल्लाह नबियों और उन पर ईमान लाने वालों को रुसवा न करेगा या फिर उसके अलावा दूसरी सूरत में वापस जा रहा है जिसकी वजह से उसका ठिकाना भी उस जैसे बुरे और गुनहगारों जैसा होगा।

दुनिया में इस तरह रहो जैसे कि तुम यात्री (अजनबी) या रास्ता पार करने वाले हो।

दुनिया में अजनबी या यात्री बनकर रहने का दूसरा मतलब यह है कि वह दुनिया से अलग-थलग रहे। यह इस पर निर्भर करता है कि यह दुनिया में देर तक रहने की आरज़ू न रखे, उसकी ख़्वाहिशों से बचें, केवल उतने ही पर संतुष्ट रहे जिससे वह जिंदा रह सके और जो बदन छुपा सके। नेमतों पर बहुत ज़्यादा शुक्र अदा करे। नेक कामों में दिल खोलकर माल खर्च करे। और जो दुनिया और आखिरत में फायदेमंद हो बस उसी में अपनी जिंदगी लगा दे। क्योंकि हमारा धर्म हमें यह आदेश देता है कि हम जरूरत के हिसाब से बिना कमी-ज़्यादती के जायज़ तरीकों से इस दुनिया से अपना हिस्सा हासिल करें।

और सच्चा मोमिन वह है जो इस दुनिया में उम्मीद और डर के दरमियान रहते हुए अपनी जिंदगी बसर करे, इस दुनिया की जायज़ चीजों से जरूरत के हिसाब से आनंद ले। अपने आपको उस दिन के लिए तैयार करे जिसमें कोई किसी को फायदा न देगा। अगर दुनिया उसे हासिल हो जाए तो उससे धोखा न खाए और उसी में मगन न हो जाए। क्योंकि वह बहुत जल्द ही उसे रुला देगी और उसका बुरा हाल कर देगी।

लोगों को उनके स्थानों (दर्जों) में रखो।

عَـنْ مَيْمُـونِ بْـنِ أَبِي شَـبِيبٍ أَنَّ عَائِشَـةَ - رَضِيَ اللَّـهُ عَنْهَـا - مَـرَّ بِهَـا سَـائِلٌ، فَأَعْطَتْـهُ كِـسْرَةً، وَمَـرَّ بِهَـا رَجُـلٌ عَلَيْـهِ ثِيَـابٌ وَهَيْئَـةٌ فَأَقْعَدَتْـهُ فَـأَكَلَ، فَقِيـلَ لَهَـا فِي ذَلِـكَ، فَقَالَتْ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "أَنْزِلُوا النَّاسَ مَنَازِلَهُمْ"

तर्जुमा: ह़ज़रत मैमून बिन अबी शबीब रद़ियल्लाहु अ़न्हु बयान करते हैं कि ह़ज़रत आ़एशा रद़ियल्लाहु अ़न्हा के पास से एक मांगने वाला (भिखारी) गुजरा तो आपने उसे रोटी (वगैरह) का टुकड़ा दिया। जबकि एक और दूसरा व्यक्ति गुजरा जो की अच्छी सूरत और अच्छे कपड़ो में था।

लोगों को उनके स्थानों (दर्जों) में रखो।

तो ह़ज़रत आ़एशा ने उसे बिठाकर खाना खिलाया। बाद में ह़ज़रत आ़एशा से इस बारे में पूछा गया (कि आपने उन दोनों के साथ अलग अलग व्यवहार क्यों किया?) तो ह़ज़रत आ़एशा ने जवाब दिया कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि विसल्लम ने फरमाया है:"लोगों को उनके स्थानों (दर्जों) में रखो।"

मुसलमान फितिरती तौर पर बुद्धिमान और दिमागदार होता है। हर चीज को उसकी जगह पर रखता है, हर काम उसके योग्य को देता है, हर हकदार का हक पहचानता है और अपनी हिकिमत (परख) से इस तरह काम करता है कि जिसि में हमेशा नरमी व अच्छाई साफ दिखाई देती है। लिहाजा आप देखेंगे कि वह अपने सारे कामों में रवादार होता है। लोगों के साथ व्यवहार करने में बड़ा नरम और दयालु होता है। उनके साथ इनकिसारी (खाकसारी, विनिम्रता, विनियशीलता) से पेश आता है। बड़ों का अदब करता है। और छोटों पर दया करता है। लोगों की कद्र पहचानते हुए उनके साथ उसी हिसाब से व्यवहार करता है। और किसी की गरीबी व मेहताजी या उसके खराब ढंग या छोटी कॉम की वजह से उसको ह़कीर नहीं समझता है।

लोगों की कद्र (दर्जा) पहचानने और बेहतर तरीके से हर व्यक्ति को उसका हक देने के बारे में यह वसियित एक महान नियिम की हैसियित रखती है।

लोगों को उनके स्थानों (दर्जों) में रखो।

अच्छे सुलूक और बेहतरीन व्यवहार करने में नबी ए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आजाद और गुलाम, फकीर और मालदार और कमजोर और ताकतवर के दरमियान कोई अंतर नहीं करते थे। बल्कि अपनी बैठक और बातचीत में हर एक को बराबर का दर्जा देते थे। अपने मानने वालों में से हर एक छोटे-बड़े पर दया फरमाते थे। यहाँ तक कि ऐसा लगता था आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी उनमें से एक हों।

तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बड़े सरदारों व बड़े लीडरों को उनके मुनासिब उपनाम (लक़ब) देते, जैसा कि हज़रत अबू बक्र को "सिद्दीक़", हज़रत उमर को "फारूक़", हज़रत उसमान को "ज़ुन्नूरैन", हज़रत अली को "कर्रार", हज़रत अबू उबैदह को "अमीन अल-उम्मह" और खालिद बिन वलीद को "सैफुल्लाह" का लक़ब दिया।

नबी ए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हर व्यक्ति की उसके मुनासिब ऐसी तारीफ करते जिसका वह योग्य होता। यही कारण है कि हर समाज और उम्र के महान लोग नबी ए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मोहब्बत करते थे। लिहाज़ा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ही बिना इख़्तिलाफ सब लोगों के सरदार हैं और सबसे बड़े हैं।

लोगों को उनके स्थानों (दर्जों) में रखो।

हमारे लिए जरूरी है कि हम पूरे तौर से इस ह़दीस़ पाक का पालन करें। लिहाजा जिन्हें अल्लाह ने बुलंद किया है जैसे नेक काम करने वाले उ़लमा ए करिम, औलिया और अल्लाह के नेक बंदे, उन्हें हम भी अपनी नजरों में बड़ा जानें, उन्हें अपनी बैठकों में नज़दीक बिठाएं, उनसे बात करते समय और उनकी तरफ देखते समय उनका सम्मान करें, जहाँ तक और जितना हो सके उनके साथ अच्छा व्यवहार करें, जितना हो सके उतना उनके नजदीक हों, उनकी गैरमौजूदगी में उनका वचाव करें, जब भी हम उन्हें याद करें तो उनके लिए भलाई की दुआ़एं करें, जिससे वह मिलते-जुलते हैं हम भी उससे मिलना-जुलना रखें और जिससे वह मोहब्बत करते हैं अल्लाह से सवाब की उम्मीद पर हम भी उससे मोहब्बत करें। और अच्छे और बुरों के साथ व्यवहार करने में नबी ए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि विसल्लम के नक्शे कदम पर चलें। लिहाज़ा जो इनकिसारी (खाकसारी, विनिम्रता, विनियशीलता) के लायक उसके साथ खाकसारी से व्यवहार करें। है और जो खाकसारी के लायक न हो उसके साथ हरगिज़ खाकसारी न करें। ताकि यह हमारे अपमान व हमारी जिल्लित का कारण न हो।

सदक़े (दान) को वापस लेने वाला उस कुत्ते की तरह है जो अपनी उल्टी खा लेता है।

عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ - رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ - قَالَ: حَمَلْتُ عَلَى فَرَسٍ عَتِيقٍ فِي سَبِيلِ اللَّهِ، فَأَضَاعَهُ صَاحِبُهُ، فَظَنَنْتُ أَنَّهُ بَائِعُهُ بِرُخْصٍ، فَسَأَلْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ ذَلِكَ؟ فَقَالَ: "لَا تَبْتَعْهُ وَلَا تَعُدْ فِي صَدَقَتِكَ، فَإِنَّ الْعَائِدَ فِي صَدَقَتِهِ، كَالْكَلْبِ يَعُودُ فِي قَيْئِهِ

तर्जुमा: ह़ज़रत उ़मर बिन खत्ताब रद़ियल्लाहु अ़न्हु बयान करते हैं: मैंने अल्लाह के रास्ते में एक अच्छा घोड़ा दे दिया। लेकिन उस घोड़े वाले ने (घास और दाने की लापरवाही से) उसको बर्बाद कर दिया। मैंने सोचा कि घोड़े वाला उसको कम कीमत पर बेच देगा। तो मैंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से इस बारे में पूछा।

सदक़े (दान) को वापस लेने वाला उस कुत्ते की तरह है जो अपनी उल्टी खा लेता है।

तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "उसको मत खरीदो और न ही अपने सदक़े (दान) को वापस लो। क्योंकि सदक़े को वापस लेने वाला उस कुत्ते की तरह है जो अपनी उल्टी खा लेता है।"

उपहार या तोहफा अगर खुदा की तरफ से हो तो वह कृपा है और अगर बंदे की तरफ से हो तो वह सदका और एहसान है। अगर खुदा की तोफीक़ व मदद न मिले तो इंसान सदक़ा या दान नहीं दे सकता। क्योंकि वह फितरती तौर पर लालची होता है। लिहाज़ा उपहार वास्तव में अल्लाह की तरफ से होता है और बंदे की तरफ से तो अलंकृत तौर पर होता है।

और जो हमेशा यह अपने दिमाग में कि रखे अल्लाह मुझे देख रहा है तो वह यह बात अच्छी तरह से जान लेगा और कभी अपने आप को देने वाला नहीं समझेगा बल्कि हमेशा अपने आपको लेने वाला ही समझेगा। और जो अपने आप का जायजा ले वह कभी लालच नहीं करेगा बल्कि उसे अपनी फितरत से उखाड़ फेंकेगा। और इसी सूरत में वह कामयाब भी होगा।

सदक़े (दान) को वापस लेने वाला उस कुत्ते की तरह है जो अपनी उल्टी खा लेता है।

सखावत (उदारता) से इंसान को एक अलग ही प्रकार की खुशी मलिती है और उसे अलग ही सुकून और इत्मीनान महसूस होता है। यह वशिषता कुछ लोगों में तो फतिरती होती है और कुछ लोग इसे हासलि करते हैं। और - अल्लाह की कृपा से- हासलि करने वाले ही ज़्यादा हैं। तथा सखी आदमी फतिरती तौर पर प्यारा होता है। याद रहे कि इस धरती पर तमाम लोगों यहाँ तक कि अंबयिा ए करिाम में भी सबसे बड़े दाता व सखी हमारे पैगंबर मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि विसल्लम हैं।

उपहार (तोहफे) में अस्ल यही है कि वापस न लयिा जाए। हाँ अगर बेटे ने कसिी को कुछ उपहार दयिा और उसकी संपत्ति में बाप के अधकिार का सदेंह है। तो इमाम मालकि और उनके मुवाफकि उ़लमा ए करिाम कुछ शर्तों के साथ उपहार की वापसी की इजाजत देते हैं। लेकनि हाँ कसिी भी हालत में सदक़े (दान) की वापसी की मनादी के बारे में उ़लमा ए करिाम का कोई इख्तलिाफ नहीं है। क्योंकि वह (सदक़ा या दान) अब अल्लाह की खातरि सदक़ा करने वाले की मल्कियित से नकिल चुका है।

उस (चोर) से अज़ाब को हल्का मत करो।

عَـنْ عَطَـاءٍ - رَضِيَ اللَّـهُ عَنْـهُ - عَـنْ عَائِشَـةَ - رَضِيَ اللَّـهُ عَنْهَـا - قَالَـتْ: سُرِقَ لَهَـا شيء فَجَعَلَـتْ تَدْعُـو عَلَيـه، فَقَـالَ لَهَـا رسـول اللـه صَـلَّى اللَّـهُ عَلَيْـهِ وَسَـلَّمَ: "لَا تُسَبِّخِي عَنْهُ

तर्जुमा: हज़रत अता रद़ियल्लाहु अनहु हज़रत आएशा से बयान करते हैं कि हज़रत आएशा ने कहा कि उनकी कोई चीज़ चोरी हो गई। तो वह उसके चुराने वाले को बद्दुआ करने लगीं। तो उनसे अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: "उस (चोर) से अज़ाब को हल्का मत करो।"

उस (चोर) से अज़ाब को हल्का मत करो।

एक सच्चा मुसलमान लानत करने वाला और बुरी बात या गालीगलौज करने वाला नहीं होता है, न ही बुराई का बदला बुराई से देता है और न ही किसी दुनियावी मामले की वजह से गुस्सा करता है जब तक कि उसके धर्म या उसके सम्मान से उसका संबंध न हो या जान व माल और औलाद को सख्त नुकसान न पहुंचे। और जब गुस्सा करता भी है तो बहुत जल्द माफ कर देता है। और जब कोई जाहिल या बेवकूफ आदमी उससे भिड़ता है तो उससे नरम बात करता है जिसमें अमन और सलामती झलकती होती है।

अगर मोमिन ठीक से यह पहचान ले कि अल्लाह सबसे ताकतवर व शक्तिशाली है और सबसे बदला लेने वाला है तो वह अपना मामला अपने अल्लाह पर छोड़ दे और ज़ालिम (अत्याचार करने वाला) को बद्दुआ न दे। क्योंकि यकीनन उसका ज़ुल्म (अत्याचार) उसे बर्बाद कर देगा भले ही कुछ समय के बाद करे।

लिहाज़ा यह अक्लमंदी नहीं है कि बंदा ज़ालिम के लिए किसी प्रकार के बदले को खुद चुने और यह कहे कि: "ए अल्लाह! तू उसके साथ ऐसा ऐसा कर।" क्योंकि इसमें अल्लाह के साथ एक तरह की बेअदबी है।

उस (चोर) से अज़ाब को हल्का मत करो।

हाँ अगर उसे अपना गुस्सा और तकलीफ कम ही करनी हो तो यूँ कहे: "मुझे अल्लाह ही काफी है और वही सबसे अच्छा मददगार है।" क्योंकि इससे उसका गुस्सा ठंडा हो जाएगा, उसकी तकलीफ कम हो जाएगी और जल्द ही अल्लाह उस पर अत्याचार करने वाले से उसका बदला लेगा।

नबी ए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इस धरती के सबसे बड़े शिक्षक (उस्ताद) हैं जो अपनी शिक्षाओं द्वारा दिलों को पाक-साफ करते हैं, अखलाक को मजबूत बनाते हैं और पुरुषों और महिलाओं को ऐसे संवारते हैं कि जिसके द्वारा एक मुसलमान अल्लाह की नजदीकी और उसकी मोहब्बत का एक महान स्थान हासिल कर लेता है।

नबी ए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कहने:"उससे अज़ाब को हल्का न करो।" का मतलब है उससे अज़ाब और सजा को कम न करो जैसा कि हमने ऊपर बयान किया।

इस (और इस जैसी) हदीस़ शरीफ से ही नबी ए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सहाबा ए करिम रद़ियल्लाहु अन्हुम ने अत्याचार और बुरे व्यवहार करने वाले को अच्छी तरह माफ करना सीखा।

बराबर बराबर हो जाओ और जुदा-जुदा न हो ताकि तुम्हारे दिल जुदा न हों।

عَنْ أَبِي مَسْعُودٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَمْسَحُ مَنَاكِبَنَا فِي الصَّلَاةِ وَيَقُولُ: "اسْتَوُوا وَلَا تَخْتَلِفُوا، فَتَخْتَلِفَ قُلُوبُكُمْ، لِيَلِنِي مِنْكُمْ أُولُو الْأَحْلَامِ وَالنُّهَى، ثُمَّ الَّذِينَ يَلُونَهُمْ، ثُمَّ الَّذِينَ يَلُونَهُمْ." قَالَ أَبُو مَسْعُودٍ: "فَأَنْتُمُ اليومَ أَشَدُّ اخْتِلَافًا

तर्जुमा: ह़ज़रत अबू मसऊ़द रद़ियल्लाहु अ़न्हु कहते हैं: अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि विसल्लम नमाज़ में (हमें बराबर बराबर खड़ा करने के लिए) हमारे कंधों को हाथ लगा कर इरशाद फरमाते:

बराबर बराबर हो जाओ और जुदा-जुदा न हो ताकि तुम्हारे दिल जुदा न हों।

:"बराबर बराबर हो जाओ और जुदा-जुदा न हो ताकि तुम्हारे दिल जुदा न हों। तुम में से पक्की बुद्धि वाले अकलमंद मुझसे मिलकर खड़े हों, फिर उनके बाद वे जो (अकलमंदी में) उनके करीब हों फिर वे जो उनके क़रीब हो।" हज़रत अबू मसऊद फरमाते हैं:" और आज तुम एक दूसरे से सबसे ज़्यादा इख्तलिाफ रखते हो।" नबी ए करीम सल्लल्लाहु अलैहि विसल्लम नमाज़ में सफों को बराबर बराबर रखने का बहुत ख्याल रखते थे। क्योंकि जमाअत के साथ नमाज़ दिलों की एकता और ईमानी भाईचारे का बेहतरीन सबूत है। लिहाज़ा जितनी ज़्यादा सफें बराबर होंगी जैसे कि ठोस इमारतें उतने ही ज़्यादा दिल प्यार व मोहब्बत, दया और इमानदारी पर एक होंगे।

नमाज़ इस्लाम धर्म का सुतून (स्तंभ, पिलर) है। यह ईमान के सही होने और विश्वास के पक्का होने का बेहतरीन सुबूत है। लिहाज़ा मुसलमानों का इसमें इकट्ठा होना सबसे बेहतर इकट्ठा होना है। क्योंकि यह उन फरिश्तों के इकट्ठा होने की तरह है जो आसमान में नमाज़ के लिए सफ बांधते हैं। लिहाज़ा नमाज़ के आखिर तक खड़े होने में जितने ज़्यादा कंधे से कंधा मिलाकर सीधे खड़े होंगे उतने ही ज़्यादा हम उन फरिश्तों के नजदीक और उनकी तरह होंगे।

बराबर बराबर हो जाओ और जुदा-जुदा न हो ताकि तुम्हारे दिल जुदा न हों।

लहिाज़ा नबी ए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि विसल्लम का फरमान: "बराबर बराबर हो जाओ और जुदा-जुदा न हो।" आप सल्लल्लाहु अ़लैहि विसल्लम के कार्य पर ज़ोर देता है। क्योंकि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि विसल्लम यह कहते जा रहे थे और साहाबा ए करिम रद़यिल्लाहु अ़न्हुम के कंधों को छू रहे थे हालांकि कंधों को छूना ही सफों को बराबर-बराबर करने के आदेश के लिए काफी था लेकिन इसके बावजूद आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने अपनी प्यारी जुबान से कहकर इस का आदेश दिया ताकि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि विसल्लम का कार्य ओर जोरदार व मजबूत हो जाए।

सफ की बराबरी का मतलब है सीधे एक दूसरे से मिल कर खड़े हो जाना कि सिभी के कदम (पैर) बराबर-बराबर हो जाएं और कंधे मिल जाएं।

नमाज में सफों की बराबरी का मकसद माफ करने और प्यार और मोहब्बत करने में दिलों का मिलना है। तथा नबी ए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि विसल्लम ने इरशाद फ़रमाया:

"सफें बराबर यानी सीधी रखो। क्योंकि सफें बराबर रखना नमाज़ के पूरा करने में शामिल है।"

बराबर बराबर हो जाओ और जुदा-जुदा न हो ताकि तुम्हारे दिल जुदा न हों।

मतलब यह है कि जमाअ़त के साथ नमाज़ सही और मुकम्मल तौर पर उसके बगैर पूरी नहीं होती। और पूरे तौर पर जमाअ़त का सवाब केवल उसी को मिलता है जो नमाज़ के शुरू से लेकर आखिर तक सफ में सीधे व बराबर खड़े होने के ख्याल रखता है।

मुझे मेरे जानी-दोस्त (नबी ए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने तीन चीजों की वसियत की: हर महीने में तीन दिन रोज़े रखना, चाशत की दो रकात नमाज पढ़ना और सोने से पहले वित्र की नमाज़ पढ़ना।

عَـنْ أَبِي هُرَيْـرَةَ رَضِيَ اللَّـهُ عَنْـهُ قَـالَ: "أَوْصَـانِي خَلِيـلِي صَـلَّى اللَّـهُ عَلَيْـهِ وَسَـلَّمَ بِثَلَاثٍ بِصِيَامِ ثَلَاثَةِ أَيَّامٍ مِنْ كُلِّ شَهْرٍ، وَرَكْعَتَيْ الضُّحَى، وَأَنْ أُوتِرَ قَبْلَ أَنْ أَرْقُدَ

तर्जुमा: हज़रत अबू हुरैरा रद़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं: "मुझे मेरे जानी-दोस्त (नबी ए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने तीन चीजों की वसयित की: हर महीने में तीन दनि रोज़े रखना, चाशत की दो रकात नमाज पढ़ना और सोने से पहले वत्रि की नमाज़ पढ़ना।"

मुझे मेरे जानी-दोस्त (नबी ए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने तीन चीजों की वसियत की: हर महीने में तीन दिन रोज़े रखना, चाशत की दो रकात नमाज पढ़ना और सोने से पहले वित्र की नमाज़ पढ़ना।

जाहिर है कि यह वसियत खासतौर पर हज़रत अबू हुरैरा रद्वियल्लाहु अन्हु के लिए ही नहीं है बल्कि तमाम मोमिन पुरुषों और महिलाओं के लिए भी है जो हज़रत अबू हुरैरा रद्वियल्लाहु अन्हु के द्वारा हम तक पहुंची है। यह उन वसियतों में से एक है जिनके द्वारा मुसलमान, हिम्मत व हौसला, अल्लाह के लिए काम करने में अपने आप को मजबूत करना, और ना पसंदीदा काम करने पर नफ्स को सुधाना सीखाता है। ताकि उसे सुधारे, बेहतर व्यवहार करने पर उसकी आदत डाले और ख्वाहिशों, सुस्ती की तरफ जाने और काम के समय में लापरवाही बरतने से उसे फटकारे।

हर महीने में तीन रोज़े रखना एक ऐसी सुन्नत है जिसको नेक लोग हमेशा करते चले आए हैं और जिसे बिना कारण कभी नहीं छोड़ा है। लिहाज़ा शाअबान के महीने के अलावा सभी महीनों में कम से कम तीन रोज़े रखना मुस्ताहब है जबकि शाअबान के महीने में मुस्ताहब यह है कि उसमें दूसरे महीनों से अधिक रोज़े रखे। और याद रहे कि हर महीने में तीन रोज़े रखना उम्र भर रोजे रखने के बराबर है।

और यह भी जान लें कि सवाब इमानदारी और नेक नियती के हिसाब से मिलता है। लिहाज़ा कभी छोटे से काम पर भी बहुत ज़्यादा सवाब मिल जाता है और कभी बहुत बड़े काम पर भी कुछ सवाब नहीं मिलता या बहुत कम मिलता है।

मुझे मेरे जानी-दोस्त (नबी ए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने तीन चीजों की वसियत की: हर महीने में तीन दिन रोज़े रखना, चाशत की दो रकात नमाज पढ़ना और सोने से पहले वित्र की नमाज़ पढ़ना।

चाशत की दो रकात नमाज़ की बड़ी फज़ीलत आई है जैसा कि उनका बहुत ज़्यादा सवाब है। क्योंकि यह ऐसी नमाज़ है जिसे अक्सर लोग दुनियावी कामों में व्यस्त रहने की वजह भूले रहते हैं। लिहाज़ा यह सवाब के मामले में रात की नमाज़ (तहज्जुद की नमाज़) की तरह है। क्योंकि वह भी ऐसे ही समय में पढ़ी जाती है जबकि लोग सोए होते हैं। लिहाज़ा अक्सर दोनों ही में ईमानदारी व नेक नियती होती है। और सवाब इमानदारी व नेक नियती के हिसाब से ही मिलता है।

चाशत की नमाज़ का समय एक या दो भालों के बराबर सूरज बुलंद होने से शुरू होता है और ज़ोहर का समय शुरू होने से पहले यानी ज़वाल के समय खत्म होता है। चाशत की नमाज कम से कम दो रकात है और ज़्यादा से ज़्यादा बारह। लिहाज़ा जो चाहे दो ही पढ़ ले और जो चाहे पूरी बारह पड़े।

याद रखें कि चाशत की नमाज़ बार-बार तौबा करने, काम में सही और अच्छी नियत करने, उसमें इमानदारी पैदा करने और लापरवाही दूर करने और ख्वाहिश को जड़ से उखाड़ फेंकने के लिए बड़ी सहायक है।

मुझे मेरे जानी-दोस्त (नबी ए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) ने तीन चीजों की वसियत की: हर महीने में तीन दिन रोज़े रखना, चाशत की दो रकात नमाज पढ़ना और सोने से पहले वित्र की नमाज़ पढ़ना।

रही वित्र की नमाज़ तो यह सुन्नते मोअक्किदा (ऐसी सुन्नत जिस पर बहुत ज़ोर दिया गया हो।) है। (हमारे यानी इमाम आ़ज़म अबू ह़नीफा के यहाँ यह वाजिब व ज़रूरी है।) लिहाज़ा मुसलमान को इसे छोड़ना नहीं चाहिए। इस पर बहुत ज़्यादा जोर दिया गया है जिसकी वजह से यह वाजिब (अनिवार्य) के करीब है। (बल्कि हमारे यहाँ वाजिब है।) लिहाज़ा हर मुसलमान की जिम्मेदारी है कि वह के सोने से पहले इसे जरूर पढ़े और कभी न छोड़े।

वास्तव में यह वसियत वित्र की नमाज़ से संबंधित है सोने से पहले पढ़ी जाए या बाद में। और हर व्यक्ति अपने हिसाब को बेहतर जानता है लिहाज़ा उस पर अमल करे जिसमें उसकी बेहतरी हो।

वित्र की नमाज़ का समय ईशा की नमाज़ से लेकर फज्र के उगने तक रहता है। अक्सर मुसलमान इसे ईशा की नमाज़ के बाद ही पढ़ लेते हैं।

जो शुरू रात में ही वित्र पढ़ ले फिर वह अधिक नमाज़ पढ़ना चाहे तो जो चाहे नमाज़ पढ़े। और अक्सर उ़लमा के नजदीक यह है कि वह दोबारा वित्र न पढ़े। क्योंकि नबी ए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: "एक ही रात में दो वित्र की नमाज़ें नहीं।"